Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24 website- www.dvpnews.in रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 114 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 18 अक्टूबर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

आज लोकतंत्र को सम्हालने वालों का तैयार करने वालों की आवश्यकता है जो इस भारत के लोकतंत्र को सही दिशा प्रदान कर सकें।

Today we need such people who can prepare defenders of democracy who in turn can give right derection to Indian democracy.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

लोक निर्माण विभाग में 51 अधिकारियों की पदोन्नति

रायपुर (विसं)। राज्य शासन के लोक निर्माण विभाग ने 51 अधिकारियों की पदोन्नति के आदेश जारी किए हैं। विभाग द्वारा तीन कार्यपालन अभियंताओं को अधीक्षण अभियंता पदोन्नत किया गया है। वहीं 48 सहायक अभियंताओं को कार्यपालन अभियंता पदोन्नत किया गया है। उप मुख्यमंत्री तथा लोक निर्माण मंत्री श्री अरुण साव के अनुमोदन के बाद शासन द्वारा मंत्रालय से पदोन्नति आदेश जारी कर दिए गए हैं। इन पदोन्नत अधिकारियों की पदस्थापना बाद में की जाएगी।

निर्वाचन व्यय की निगरानी के लिए 9 उड़नदस्तों और 12 एसएसटी का गठन

रायपुर (विसं)। भारत निर्वाचन आयोग द्वारा रायपुर नगर (दक्षिण) विधानसभा के लिए उप-निर्वाचन के कार्यक्रम की घोषणा के साथ ही आदर्श आचार संहिता प्रभावी हो गई है। निर्वाचन व्यय अनुवीक्षण अंतर्गत निर्वाचन व्यय की निगरानी के लिए संपूर्ण जिले में 19 सेक्टर मजिस्ट्रेट की नियुक्ति की गई है। साथ ही नौ उड़नदस्ता दल (एफएसटी), 12 स्थैतिक निगरानी दल (एसएसटी) और दो वीडियो अवलोकन दलों (वीवीटी) का गठन किया गया है। इनके साथ ही निर्वाचन व्यय पर कड़ी निगरानी के लिए जिला निर्वाचन अधिकारी, रायपुर द्वारा अलग-अलग क्षेत्रों में चार स्थैतिक नाकों की भी स्थापना की गई है।

नायब सिंह सैनी ने ली हरियाणा के मुख्यमंत्री पद की शपथ, प्रधानमंत्री सहित कई वरिष्ठ नेता हुए शामिल

राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय ने दिलाई पद और गोपनीयता की शपथ

पंचकूला (आरएनएस)। हरियाणा में लगातार तीसरी बार भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की सरकार बन गई है। नायब सिंह सैनी ने गुरुवार को हरियाणा के मुख्यमंत्री के रूप में दूसरी बार शपथ ली। उन्हें राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

उन्होंने कुरुक्षेत्र की लाडवा सीट से कांग्रेस के मेवा सिंह को मात देकर चुनाव जीता था। नायब सिंह सैनी के अलावा अनिल विज ने मंत्री पद की शपथ ली है। अनिल विज अंबाला कैंट से विधायक हैं। इसके अलावा भाजपा विधायक कृष्ण लाल पंवार, राव नरबीर सिंह, महिपाल ढांडा, विपुल गोयल ने भी मंत्री पद की शपथ ली।

सोनीपत सीट की गोहाना सीट से विधायक अरविंद कुमार शर्मा को भी नायब सिंह सैनी मंत्रिमंडल में जगह दी गई है। भाजपा विधायक श्याम सिंह राणा, रणबीर गंगवा, कृष्ण कुमार बेदी, श्रुति चौधरी और आरती सिंह राव ने मंत्री पद की शपथ ली।

नायब सिंह सैनी ने शपथ लेने से पहले पंचकूला स्थित माता मनसा देवी मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना कर मां का आशीर्वाद लिया। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा, आज शपथ ग्रहण समारोह से पूर्व पंचकूला स्थित माता मनसा देवी मंदिर पहुंचकर पूजा अर्चना कर मां का आशीर्वाद प्राप्त किया और प्रदेश के अपने समस्त परिवार जनों की खुशहाली के लिए कामना की। मां का आशीर्वाद मुझे निरंतर सेवा और समर्पण के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है।

पंचकूला के सेक्टर 5 स्थित दशहरा मैदान में हुए नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ, असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा, गुजरात के सीएम भूपेंद्र पटेल और अन्य सीएम, डिप्टी सीएम, केंद्रीय मंत्री और एनडीए के तमाम नेता मौजूद हैं।

अंबाला कैंट से विधायक अनिल विज ने मंत्री पद की शपथ ली, मंत्रिमंडल में दो महिलाओं समेत 13 चेहरे

हरियाणा में 5 अक्टूबर को एक चरण में विधानसभा चुनाव हुए थे, जिसमें भाजपा ने 90 में से 48 सीटों पर जीत हासिल की थी, वहीं कांग्रेस ने 37 सीट पर जीत दर्ज की थी।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने नायब सिंह सैनी को दी बधाई

हरियाणा के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने पर नायब सिंह सैनी जी और उनके साथ मंत्री के रूप में शपथ लेने वाले सभी साथियों को बहुत-बहुत बधाई। यह टीम सुशासन और अनुभव का एक अद्भुत संगम है, जो यहां के लोगों के सपनों को साकार करने के साथ ही राज्य के विकास को एक नई ऊंचाई पर ले जाएगी। मुझे विश्वास है कि डबल इंजन की सरकार गरीबों, किसानों, जवानों, युवाओं और महिलाओं के साथ ही समाज के हर वर्ग की सेवा में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ेगी।

मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में कल 18 अक्टूबर को होगी पहली कैबिनेट बैठक, विभागों का होगा वितरण

चंडीगढ़ (आरएनएस)। चंडीगढ़ से बड़ी खबर आ रही है कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी की अध्यक्षता में शुक्रवार को पहली कैबिनेट बैठक आयोजित की जाएगी। इस बैठक को सरकार के कामकाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि इसमें कई अहम फैसलों पर विचार किया जाएगा। माना जा रहा है कि सरकार की प्राथमिकताएँ तय करने के साथ ही हरियाणा विधानसभा के आगामी सत्र की तारीख का भी ऐलान इसी बैठक में किया जा सकता है।

बैठक से पहले कैबिनेट मंत्रियों को उनके विभागों का वितरण किया जाएगा, जिससे हर मंत्री को उनकी जिम्मेदारी और कार्यक्षेत्र स्पष्ट हो सके। नई सरकार के गठन के बाद से यह बैठक सभी की निगाहों में है, क्योंकि इसमें लिए जाने वाले फैसले हरियाणा की राजनीतिक दिशा और विकास के रोडमैप को प्रभावित करेंगे।

केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने अंतर्राष्ट्रीय मेथनॉल सेमिनार का किया उद्घाटन

गडकरी ने ऊर्जा स्वतंत्रता और माल ढुलाई लागत में कमी लाने के लिए जैव ईंधन के उपयोग पर जोर दिया

दिल्ली (पीआईबी)। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री श्री नितिन गडकरी ने आज नई दिल्ली में नीति आयोग द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय मेथनॉल संगोष्ठी एवं प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर नीति आयोग के उपाध्यक्ष श्री सुमन बेरी, नीति आयोग के सदस्य श्री वी.के. सारस्वत, भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार श्री अजय कुमार सूद उपस्थित थे। श्री गडकरी ने प्रदर्शनी का भी दौरा किया, जहां मेथनॉल आधारित उत्पादों एवं मशीनरी का प्रदर्शन किया गया।

सेमिनार में बोलते हुए, श्री नितिन गडकरी ने बढ़ते प्रदूषण और जीवाश्म ईंधन का आयात दो प्रमुख चिंताओं पर जोर दिया। उन्होंने आत्मनिर्भरता के लिए इन आयातों को खासकर वैश्विक भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं के मद्देनजर, कम करने की तत्काल आवश्यकता को रेखांकित किया, जो कि लगभग 22 लाख करोड़ रुपए है। नितिन गडकरी ने ऊर्जा स्वतंत्रता प्राप्त करने, कृषि अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और भारत के किसानों की समृद्धि सुनिश्चित करने में जैव ईंधन के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि मेथनॉल, इथेनॉल और बायो-सीएनजी जैसे वैकल्पिक ईंधन का उपयोग करके भारत की रसद लागत को कम किया जा सकता है।

रक्षा मंत्रालय को मिला 6 करोड़ का राजस्व और 3.80 लाख वर्ग फीट जगह

नई दिल्ली (आरएनएस)। रक्षा मंत्रालय ने 6 करोड़ रुपए से अधिक का राजस्व अर्जित किया। खास बात यह है कि यह राजस्व अनावश्यक वस्तुओं के निपटान से अर्जित किया गया है।

रक्षा मंत्रालय का कहना है कि उसके अंतर्गत आने वाले रक्षा उत्पादन विभाग (डीडीपी) द्वारा स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस स्वच्छता अभियान के कारण जहां करोड़ों रुपए का राजस्व प्राप्त हुआ है, वहीं लाखों स्क्वायर फीट स्थान भी बेकार पड़े सामान से मुक्त हुआ है।

गुरुवार को इस संदर्भ में जानकारी देते हुए रक्षा मंत्रालय ने बताया कि महीने भर चलने वाले स्वच्छता अभियान 4.0 के अनुरूप रक्षा क्षेत्र के सार्वजनिक उपक्रमों (डीपीएसयू) और संबद्ध कार्यालयों में स्वच्छता नियमों को लागू किया गया है। इसके अंतर्गत बिना देरी किए, कामों को पूरा करने पर मुख्य जोर दिया जा रहा है।

मंत्रालय का कहना है कि अभी तक 1,444 स्वच्छता अभियान चलाए गए हैं। इन अभियानों के मध्य तक विभाग ने कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। इन अभियानों के अंतर्गत 16,599 फाइलों, रिकॉर्डों की समीक्षा की गई है और उन्हें छांटने के लिए अलग किया गया है। लगभग 1.5 लाख मीट्रिक टन अप्रयुक्त वस्तुओं का निपटान करके 3.80 लाख वर्ग फीट से अधिक स्थान मुक्त किया गया है। स्क्रैप या अनावश्यक वस्तुओं के निपटान से 6 करोड़ रुपए से अधिक का राजस्व अर्जित किया गया है।

संजीव खन्ना हो सकते हैं सुप्रीम कोर्ट के अगले मुख्य न्यायाधीश, सीजेआई ने केंद्र को भेजा नाम

नई दिल्ली (आरएनएस)। 10 नवंबर 2024 को सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ अपने पद से रिटायर हो रहे हैं। देश के अगले चीफ जस्टिस के लिए उन्होंने जस्टिस संजीव खन्ना का नाम केंद्र सरकार को भेज दिया है। आपको बता दें कि सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति आमतौर पर वरिष्ठता के सिद्धांत के अनुसार ही की जाती है। सीजेआई सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम के प्रमुख होते हैं, जो सुप्रीम कोर्ट और देश के विभिन्न हाईकोर्ट में जजों की नियुक्ति की सिफारिश करता है। सीजेआई डीवाई चंद्रचूड़ 2 साल तक पद पर रहने के बाद सेवानिवृत्त होने वाले हैं। अपना कार्यकाल समाप्त होने से पहले उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के नाम की सिफारिश कर दी है। न्यायमूर्ति संजीव खन्ना 11 नवंबर 2024 को 6 महीने के कार्यकाल के लिए मुख्य न्यायाधीश के रूप में पदभार ग्रहण करेंगे। वह 13 मई 2025 तक अपने पद पर बने रहेंगे। इसके बाद वह रिटार हो जाएंगे।

रायपुर दक्षिण विधानसभा उप-निर्वाचन-2024 : कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने मतदान केंद्र के 85 बूथों का किया निरीक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर दक्षिण विधानसभा उप-निर्वाचन 2024 के तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने मतदान केंद्रों के 85 बूथों का निरीक्षण किया। कलेक्टर डॉ. सिंह ने निरीक्षण के दौरान मतदान केंद्र में मतदाताओं के प्रवेश और निकासी के लिए अलग-अलग गेट तैयार करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि सभी मतदान केंद्रों में बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित की जाए और मतदाताओं के बैठने के लिए यथासंभव वेटिग हॉल और मतदान केंद्रों में आवश्यकतानुसार बेंच लगाया जाएं। मतदान केंद्र में कुर्सी एवं टेबल लगाया जाए। साथ ही मतदान केंद्र में पेयजल, बिजली, शौचालय, मतदान दलों के ठहरने की व्यवस्था बेहतर की जाएं। एसएसपी श्री संतोष सिंह ने भी मतदान दलों का निरीक्षण करते हुए कहा कि मतदान केंद्रों में सुरक्षा व्यवस्था पुख्ता की जाएं। निरीक्षण के दौरान नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा, सहायक कलेक्टर सुश्री अनुपमा आनंद, एडीएम श्री देवेंद्र पटेल, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री उमाशंकर बंदे, रिटर्निंग ऑफिसर श्री पुष्पेंद्र शर्मा, सहायक रिटर्निंग ऑफिसर श्री राकेश देवांगन समेत अन्य अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कटोरातालाब के संत कवर राम उच्चतर माध्यमिक शाला, प्रियदर्शनी नगर के संत ज्ञानेश्वर अंग्रेजी माध्यम स्कूल, मठपुरैना के शासकीय प्राथमिक शाला, भाठागांव के शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, चंगोराभाठा के शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला, संतोषी नगर के राम मनोहर लोहिया शासकीय उच्चतर माध्यमिक शाला आदि के मतदान केंद्र का निरीक्षण किया।

अगरतला-लोकमान्य तिलक टर्मिनस ट्रेन के कई कोच हुए डिरेल

असम (आरएनएस)। असम से इस वक्त की बड़ी खबर सामने आ रही है। यहां डिबालोंग स्टेशन के पास एक ट्रेन डिरेल हो गई है। बताया जा रहा है कि जिस ट्रेन के डिब्बे पटरी से उतरे हैं वह अगरतला-लोकमान्य तिलक एक्सप्रेस ट्रेन है। ये हादसा गुरुवार को 3.55 बजे हुआ है। अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार हादसे में ट्रेन के 8-10 डिब्बे पटरी से उतरे हैं। वहीं रेलवे प्रवक्ता ने बताया कि घटना में किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है। अगरतला और मुंबई के लोकमान्य तिलक टर्मिनस के बीच चलने वाली ट्रेन डिबालोंग स्टेशन से गुजरते समय पटरी से उतर गई। फिलहाल जांच चल रही है और अधिकारी अन्य सेवाओं में व्यवधान को कम करने के लिए प्रभावित पटरियों को साफ करने का काम कर रहे हैं।

रेलवे ने बदला टिकट रिजर्वेशन नियम, 120 नहीं, अब 60 दिन पहले करवा सकेंगे बुक

नई दिल्ली (आरएनएस)। यात्रीगण कृपा ध्यान देंः अब रेलवे ने टिकट रिजर्वेशन नियम में बदलाव कर दिया है। जिससे आपकी यात्रा और खास बन जाएगी। रेल से सफर करने वाले यात्री अब केवल 60 दिन पहले तक ही टिकट बुक कर सकेंगे। आगामी एक नवंबर से रेल मंत्रालय द्वारा यह व्यवस्था शुरू की जा रही है।

रेलवे मंत्रालय की तरफ से जारी आदेश में कहा गया है कि आरक्षित टिकट लेने के लिए अभी यात्री 120 दिन पहले बुकिंग करते हैं, लेकिन आगामी 1 नवंबर से इसमें बदलाव किया जा रहा है और इस अवधि को घटाकर 60 दिन किया जा रहा है। इसका असर 31 अक्टूबर तक बुक की जाने वाली टिकटों पर नहीं पड़ेगा और यात्री 120 दिन पहले टिकट ले सकेंगे। यात्री उन टिकटों को भी कैंसल कर सकेंगे जिनके जाने में 60 दिन से अधिक समय बचा हुआ है। दिन के समय चलने वाली गाड़ियां जैसे ताज एक्सप्रेस, गोमती एक्सप्रेस आदि पर इस नियम का कोई असर नहीं पड़ेगा। उनमें पहले की तरह ही समय सीमा जारी रहेगी। इसके अलावा फॉरेन टूरिस्ट्स गाड़ियों पर भी इस आदेश का असर नहीं होगा। उनमें 365 दिन पहले बुकिंग की जा सकती है। दिवाली-छठ जैसे त्योहारों की वजह से कई लोगों ने रिजर्वेशन शुरू होते ही अपने टिकट बुक करवा लिए होंगे। अगर आप भी इसी लिस्ट में हैं तो परेशान होने की जरूरत नहीं है। दरअसल, रेलवे के इस फैसले का असर 31 अक्टूबर तक बुक होने वाले टिकटों पर नहीं पड़ेगा। यानी कि इस महीने के आखिरी तक चार महीने तक के टिकट बुक करवाए जा सकेंगे, लेकिन एक नवंबर से सिर्फ 60 दिनों तक के ही टिकट बुक हो सकेंगे।

केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने किसान और किसान संगठनों से की चर्चा, दिये कई रचनात्मक सुझाव

किसानों से खेती से संबंधित कई विषयों पर हुई चर्चा

दिल्ली (पीआईबी)। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने किसान और किसान संगठनों से संवाद के क्रम में आज नई दिल्ली में किसान संगठनों और उनके सदस्यों व अलग-अलग राज्यों के अनेकों किसान प्रतिनिधियों व किसानों से चर्चा की। उन्होंने कहा कि किसानों से खेती से संबंधित कई विषयों पर गंभीरता से चर्चा हुई है।

श्री चौहान ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में किये गये सभी प्रयासों सहित पिछले कल रबी की एमएसपी बढ़ाने की जानकारी किसानों को दी गई। किसान संगठनों ने कई महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की व कई रचनात्मक सुझाव दिये। किसानों ने कहा कि मॉडल कृषि फार्म (मॉडल कृषि फार्मिंग) बनना चाहिए जिसमें यह जानकारी दी जाये कि एक-दो या ढ़ाई एकड़ ज़मीन वाले किसान कैसे खेती करें और किस तरह से उसी में लाभकारी खेती करें? किसानों ने एक एकड़ वाले फार्म में ही लाभकारी खेती कर रहे किसानों के उदाहरण भी दिये। उन्होंने पानी पहुँचाने, उर्वरकों के प्रयोग, मिट्टी को स्वस्थ बनाना, प्राकृतिक आपदा में हुए नुकसान के कारण परेशानियां, चीनी मिलों के बंद होने और आवारा पशुओं की समस्याओं आदि को लेकर चर्चा की। किसानों ने श्रीअन्न को बढ़ावा देने को लेकर भी सुझाव दिये हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि किसानों के सुझावों पर गंभीरता से विचार कर उनके समाधान का प्रयास करेंगे। राज्य सरकार से संबंधित विषय राज्यों को भेजेंगे और केंद्र सरकार के विषयों पर विभाग कार्रवाई करेंगे। किसानों से संवाद बहुत उपयोगी है। इस संवाद से हमें मूल समस्याओं की जानकारी सीधे किसानों से मिल रही है। साथ ही, शासकीय योजनाओं को भी किसानों तक पहुंचा रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री नायब सिंह सैनी को सभी 23 फसलों को घोषित एमएसपी पर खरीदने का फैसला लेने पर धन्यवाद देता हूं व अभिनंदन करता हूँ।

बिहार में जहरीली शराब पीने से 24 लोगों की मौत

पटना (आरएनएस)। बिहार में जहरीली शराब ने कई लोगों मौत की नींद सुला दिया है। सीवान और छपरा के अलग-अलग गांवों में संदिग्ध परिस्थितियों में 24 लोगों की मौत हुई है और मृतकों की संख्या बढ़ती जा रही है। मृतक लोगों के परिजनों के मुताबिक, उनकी मौत जहरीली शराब पीने से हुई है।

जानकारी के अनुसार इन सभी ने घटना से दो दिन पहले शराब पी थी। जिसके बाद 12 से ज्यादा लोग बीमार पड़े, जिनका इलाज अलग-अलग अस्पतालों में चल रहा है। इनमे दो लोगों की आंख की रोशनी चली गई है। सीवान एसपी ने जिले में अवैध शराब पीने से 20 लोगों की मौत की पुष्टि की है। घटना के बाद एसआईटी का गठन किया गया है। पुलिस ने 8 लोगों पर एफआईआर दर्ज कर 3 आरोपियों की गिरफ्तारी की है।

जीएसटी कार्यशाला से पॉवर कंपनी की दक्षता में सुधार : डॉ. रोहित यादव

सी.बी.आई.पी. के सहयोग से छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी मुख्यालय में प्रशिक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनीज के मुख्यालय विद्युत सेवा भवन में आज 2 दिवसीय जी.एस.टी. कार्यशाला की शुरूआत अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव के मुख्य आतिथ्य में की गई। इस अवसर पर डॉ. यादव ने कहा कि पॉवर कंपनियों की दक्षता और कार्य निष्पादन में सुधार के लिए यह कार्यशाला बहुत महत्वपूर्ण है।

इस अवसर पर कंपनी अध्यक्ष डॉ. रोहित यादव, उत्पादन कंपनी के एम.डी. श्री एस.के. कटियार, पारेषण कंपनी के एम.डी. श्री राजेश कुमार शुक्ला, वितरण कंपनी के एम.डी. श्री भीमसिंह कंवर, सेंट्रल बोर्ड ऑफ इरिगेशन एण्ड पॉवर (सी.बी.आई.पी.) के डायरेक्टर श्री संजीव सिंह तथा उनके साथ आई फैकल्टी का स्वागत किया गया। अपने संबोधन में डॉ. रोहित यादव ने कहा कि उन्हें इस बात की बेहद प्रसन्नता है कि अध्यक्ष के रूप में कार्यभार ग्रहण करने के पश्चात वे जिस पहले कार्यक्रम में शामिल हो रहे हैं वह ट्रेनिंग व स्किलिंग से संबंधित है। ज्यादातर भर्ती के समय एक बार ट्रेनिंग होती है उसके बाद लोग अपने-अपने कामों में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि ट्रेनिंग की बातें पीछे छूट जाती हैं। उन्होंने कहा कि जहां तक स्टेट पॉवर कंपनियों की बात है तो हमारे छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर कंपनी की स्थिति अन्य राज्यों की तुलना में बहुत अच्छी है। यहां काम काफी प्रोफेशनल तरीके से किया जाता है। जिसके लिए यहां के वरिष्ठ अधिकारी और कर्मचारी बधाई के पात्र हैं। हमारी कंपनियों को बहुत तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। उत्पादन में ही ले तो निजी क्षेत्र या स्वतंत्र विद्युत उत्पादकों से लेकर प्रोद्यौगिकी को लेकर भी चुनौतियां हैं। ग्रीन एनर्जी, सोलर एनर्जी को लेकर बड़े लक्ष्य हैं। अपनी क्षमताओं को प्रतिस्पर्धा में बनाएं रखने के लिए लगातार सुधार की जरूरत है। इसमें हमें सेंट्रल बोर्ड ऑफ इरिगेशन एण्ड पॉवर का साथ मिलना बहुत महत्वपूर्ण है। मै चाहूंगा कि आप जी.एस.टी. को लेकर हमारे यहां जो सुधार संभव हो उसके लिए मार्गदर्शन करें। हमारे अधिकारी और कर्मचारी प्रशिक्षण के दौरान सिर्फ 2 दिन ही नहीं बल्कि आगे भी आपसे जुड़े रहें।

इस अवसर पर सी.बी.आई.पी. के डायरेक्टर श्री संजीव सिंह ने जी.एस.टी. पर वर्कशॉप के लिए पॉवर कंपनी की पहल की सराहना की। उनके साथ फैकल्टी मेंबर्स के रूप में श्री राजीव गुप्ता सीनियर फाइनेंशियल एडवाइजर, श्री सौरभ अग्रवाल, श्री भावेश मित्तल, सुश्री निकिता अग्रवाल भी आए थे। अतिथियों का स्वागत ई.डी. फाइनेंस श्री एम.एस. चौहान, श्री आलोक सिंह, श्री संदीप मोदी, श्रीमती नंदिनी भट्टाचार्य, श्री मुकेश कश्यप, श्री जी.के. राठी तथा श्री अरविंद चंद्राकर द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन अतिरिक्त महाप्रबंधक (जनसंपर्क) श्री उमेश कुमार मिश्र द्वारा किया गया।

संक्षिप्त समाचार

नित्य नये आयाम छूते डॉ. अभिमन्यु साहू

रायपुर (विश्व परिवार)। डॉ. अभिमन्यु पेन रिलीफ सेंटर पिछले 5 वर्षो से रायपुर के समता कॉलोनी में संचालित है जहां पिछले 5 वर्षो में जोड़ों,नसों, मांसपेशियों के दर्द के लगभग 12500 मरीजों का सफलतापूर्वक ईलाज किया जा चुका है जिसकी सबसे बड़ी ख़ासियत है, यह ईलाज पूर्णत: आयुर्वेदिक है जिसके कोई साईड इफेक्ट नहीं है तथा लागत भी कम आती है। डॉ. अभिमन्यु साहू ने बताया हमारे यहां ना सिर्फ छ.ग. बल्कि भारत के विभिन्न हिस्सो जैसे उड़ीसा, झारखंड, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात से मरीज आते है कुछ मरीज विदेशो से भी सलाह लेते है उनकी तकलीफ दूर करने के लिए हमने 2 वर्ष पहले अष्ठवेदा टेलीमेडीसीन सुविधा की शुरूवात की, इस सुविधा का सैकडो मरीज लाभ उठा रहे है। हम हमारी बहुत सी दवाईयां पिछले 4 वर्षो से खुद ही निर्मित कर रहे है ताकि मरीज़ों को सर्वोत्तम दवा व उपचार मिल सके, यह दवाईयां बाजार में आयुर्जीनोमिक्स बोटेनिकल के नाम से उपलब्ध है। डॉ. अभिमन्यु ने बताया जल्द ही हम छ.ग. का पहला मल्टीस्पेशिलिटी 20 बेड का हॉस्पिटल ला रहे है, जहां मरीजो के दर्द के रोगो के अलावा बाकि विभागो जैसे गायनी, स्किन,पीडियाट्रिक,पाईल्स आदि के उपचार की सुविधा मिलेगी हमारे यहां प्राचीन आयुर्वेदिक पद्धतियां जैसे पंचकर्म, शिरोधारा, क्षारसूत्र, लेज़र आदि की सुविधा भी उपलब्ध रहेगी।

नगर पंचायत माना कैम्प के सभी 15 वार्डो में मतदाता पुनरीक्षण का कार्य प्रारंभ

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर पंचायत माना कैम्प अंतगर्त वार्ड 1 से 15 तक मतदाता सूची में नाम परिवर्धन संशोधन एवं विलोपन का कार्य बुधवार 16 अक्टूबर से प्रारंभ हो गया है, जो 23 अक्टूबर तक निर्धारित किया गया है। मतदाता सूची में परिवर्धन, संशोधन एवं विलोपन का कार्य बीएलो के द्वारा किया जा रहा है। इसकी सूचना एक दिन पहले ही कार्यालय नगर पंचायत माना कैम्प द्वारा दी गई है। ऐसे मतदाता जिनकी उम्र 1 जनवरी 2024 की स्थिति में 18 वर्ष पूर्ण होने पर आवश्यक दस्तावेज के साथ नाम जुड़वाने संबंधित दस्तावेज आधार कार्ड या राशन काड, जन्मतिथि त्रुटि है तो 5 वी, 8 वीं या 10 वी की अंकसूची नाम विलोपन हेतु दस्तावेज, मृत्यु प्रमाण पत्र, शादी या स्थानांतरण के लिए पंचनामा नाम संशोधित हेतु दस्तावेज, आधार कार्ड, राशन कार्ड, जन्मतिथि त्रुटि हेतु कोई एक अंकसूची 5वीं, 8वीं या 10 वीं की प्रस्तुत कर सकते हैं। प्राधिकृत अधिकारी गंगाधर कोसरिया सहायक शिक्षक वार्ड क्रमांक 6,7 और 5, स्थान कमाण्डेट ऑफिस माना कैम्प नरेन्द्र कुमार देशलहरे, श्रीमती ममता कुजुर सहायक शिक्षक वार्ड क्रमांक 10,9,814,15,1 और 11 स्थान शा.प्रा.शाला माना कैम्प विकास सोनकर, श्रीमती शारदा ध्रुव सहायक शिक्षक वार्ड क्रमांक 4,3,2,13 और 12 स्थान आई.टी.आई. माना कैम्प राधेश्याम बांधे की ड्यूटी लगाई है।

स्वच्छता ही सेवा है के तहत सीआरपीएफ कैंप भिलाई में चला स्वच्छता अभियान

जन अभियान बनता जा रहा है स्वच्छता अभियान अजय

आरंग (विश्व परिवार)। बुधवार को सीआरपीएफ कैंप ग्रुप केंद्र भिलाई में डीआईजी अजय कुमार सिंह के निर्देशन में स्वच्छता ही सेवा है के तहत् स्वच्छता अभियान चलाया गया। जिसमें कैंप के समस्त अधिकारी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर देश भर में स्वच्छता ही सेवा है के तहत् अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही जन-जागरूकता के लिए जगह जगह विविध गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है।वहीं सीआरपीएफ कैंप भिलाई में 2 से 31अक्टूबर तक स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही आसपास के ग्रामों व स्कूलों में भी स्वच्छता अभियान चलाकर लोगों को स्वच्छता के लिए जागरूक व प्रेरित कर रहें है।

इसी कड़ी में बुधवार को सीआरपीएफ कैंप के आवासीय परिसर, कैंप के अस्पताल परिसर, पीटी परेड ग्राउंड, क्वार्टर गार्ड, प्रशासनिक भवन इत्यादि स्थानों पर स्वच्छता अभियान चलाया गया। साथ ही स्वच्छता अभियान पर जागरूकता नारा लगाते हुए स्वच्छता का संदेश दिया गया। इस अवसर पर कमांडेंट ए के सिंह ने कहा स्वच्छता हमारे जीवन का अनिवार्य पहलू है। इसे हमें अपने आचरण में शामिल करना चाहिए और लोगों को भी स्वच्छता के लिए प्रेरित करना चाहिए।तभी स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य पूर्ण होगा।

शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय में 15 एवं 16 अक्टूबर को परिक्षेत्र स्तरीय कब्बड्डी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया

बलौदाबाजार। शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बालौदाबाजार में दिनांक 15 एवं 16 अक्टूबर 24 को परिक्षेत्र स्तरीय कब्बडी (महिला) प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सर्वप्रथम प्राचार्य डॉ. कल्पना उपाध्याय द्वारा दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम प्रारंभ किया गया। प्राचार्य का स्वागत एवं डॉ. विकास सहायक क्रीडा अधिकारी कोहका का स्वागत पुष्प गुच्छ से महाविद्यालय की क्रीड़ा अधिकारी डॉ. सुलेखा राउत द्वारा किया गया। इस अवसर साहा सर ने खिलाड़ियों को अनुशासन में रहकर खेलने एंव अच्छे प्रदर्शन करने हेतु बधाई दी। डॉ. कल्पना उपाध्याय ने परिक्षेत्र स्तरीय महिला कबड्डी प्रतियोगिता में उपस्थित सभी क्रीडा अधिकारी, प्रभारी एवं खिलाडीयों का स्वागत अभिनंदन किया। इस प्रतियोगिता के माध्यम से आपको महिला पावर को दिखाना है। सभी खिलाड़ी हार जीत की भावना को परे रखकर खेल भावना के साथ खेले। बालौदाबाजार बाजार सेक्टर की टीम वि.वि. स्तर पर खेले इसके लिए सभी टीम एंव खिलाडियों के शुभकामनायें दी। प्रथम मैच शुभआरंभ श्री राजकमल मिश्रा के द्वारा नारियल तोडकर किया गया। इस प्रतियोगिता में रायपाली बसना, पिरदा, बागबहरा, महासमुन्द, बिलाईढ़, कसडोल, सिमगा, भाटापारा, कोहका रामचंडी सरायपाली, सोनाखान, भटगॉव, डीके. महाविद्यालय बालौदाबाजार, शासकीय मिनीमाता कन्या महाविद्यालय बालौदाबाजार, पिथौरा 16 टीमों ने भाग लिया। प्रथम सेमी फायनल महासमुन्द व बसना के बीच हुआ जिसमें महासमुन्द विजेता रही। द्वितीय सेमीफायनल बागबहरा व कसडोल के मध्य हुवा जिसमे बागबहरा विजेता रही।

डीएड अभ्यर्थियों ने मंत्रालय के सामने किया धरना प्रदर्शन

रायपुर (आरएनएस)। डीएड डिप्लोमा अभ्यर्थियों ने नियुक्ति की मांग को लेकर सोमवार को मंत्रालय के सामने गेट पर बैठकर अनिश्चितकालीन धरना प्रदर्शन शुरू कर दिया है। अभ्यर्थियों का कहना है कि हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों के अनुसार सहायक शिक्षक के 2800 से अधिक पदों पर अवैध भर्ती की गई है।

बिजली बंद की सूचना

कार्यालय कार्यपालन अभियंता (संचा. / संधा.) संभाग
छत्तीसगढ़ स्टेट पॉवर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड बलौदा बाजार

समस्त सम्माननीय विद्युत उपभोक्ताओं को सूचित किया जाता है कि दीपावली पूर्व विद्युत लाईनों एवं उपकरणों के आवश्यक सुधार एवं रखरखाव कार्य हेतु नीचे लिखे विवरणानुसार सुबह 9:00 बजे से शाम 4:00 बजे तक विद्युत आपूर्ति बंद रहेगी। सम्मानीय उपभोक्ताओं को होने वाली असुविधा के लिये खेद है।

क्र	दिनांक	33 एवं 11 के.व्ही. फीडर का नाम	उपकेन्द्र का नाम	प्रभावित क्षेत्र
1	18.10.2024 (शुक्रवार)	11 के.व्ही. करमदा फीडर	करमदा	संबंधित 11 के.व्ही. के अंतर्गत आने वाले समस्त उपभोक्ता / ग्राम
		11 के.व्ही. फीडर-2	अम्बेडकर चौक	
		11 केव्ही डमरू फीडर	बलौदाबाजार	
		33/11 के.व्ही. गाड़ाभाठा एंव देवसुन्द्रा फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र गाड़ाभाठा	11 के.व्ही गाडाभाठा एंव देवसुन्द्रा फीडर से प्रभावित समस्म उपभोक्ता
		11 केव्ही रोहांसी फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र ठेलकी	11 के.व्ही रोहांसी फीडर से प्रभावित समस्त उपभोक्ता।
		11 केव्ही पनगांव फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र मगरचबा	11 केव्ही पनगांव फीडर से संबधित समस्त उपभोक्ता।
		11 केव्ही खर्चा-डमरू फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र डमरू	11 केव्ही खर्चा-डमरू फीडर से संबंधित समस्त उपभोक्ता।
2	19.10.2024 (शनिवार)	11 के.व्ही. गैतरा/पौसरी फीडर	33/11 के.व्ही. करमदा	संबंधित 11 के.व्ही. फीडर के अंतर्गत आने वाले
		11 के.व्ही. कोकड़ी फीडर	33/11 के.व्ही. रिसदा	समस्त उपभोक्ता / ग्राम।
		11 केव्ही छेरकापुर फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र ठेलकी	11 के. व्ही छेरकापुर फीडर से प्रभावित समस्त उपभोक्ता।
		11 केव्ही कौवाडीह फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र वटगन	11 के.व्ही कौवाडीह फीडर से प्रभावित समस्त उपभोक्ता।
		11 के.व्ही पलारी फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र पलारी	पलारी शहर के समस्त उपभोक्ता ।
		11 केव्ही अहिल्दाफीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र लवन	11 केव्ही अहिल्दा फीडर से संबधित समस्त उपभोक्ता ।
		11 केव्ही लाहोद फीडर	33/11 के.व्ही. उपकेन्द्र लाहोद	11 केव्ही लाहोद फीडर से संबधित समस्त उपभोक्ता।
3	20.10.2024 (रविवार)	11 के.व्ही. पलारी फीडर	33/11 के.व्ही. बलौदाबाजार	संबंधित 11 के. व्ही. फीडर के अंतर्गत आने वाले समस्त उपभोक्ता

टीप 1) आवश्यकतानुसार समय मे परिवर्तन किया जा सकता हैं ।
2) स्वहित एवं राष्ट्रहित मे विद्युत की बचत करें ।
3) विद्युत बिल का भुगतान समय पर करे ।

/ दीपावली की शुभकामनाएँ //

(रोशन लाल देवांगन)
कार्यपालन अभियंता (संचा/संधा)
संभाग छ.स्टेट.पॉ.डि.क.लि. बलौदा बाजार

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./14553/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 15-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14553
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446C00385** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **MANISH PARAKH, DHIRAJ PARAKH** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SURENDRA PARAKH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MURLIDHAR AASIJA AND AAKASH DAWDA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI VIRUMAL AASIJA AND S/O SHRI ASHOK DAWDA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

CHHATTISGARH STATE POWER DISTRIBUTION CO. LTD.
A GOVERNMENT OF CHHATTISGARH UNDERTAKING) (A SUCCESSOR COMPANY OF CSEB)
O/o THE SUPERINTENDING ENGINEER, CC-I, RAIPUR, CSPDCL, OLD MANTRALAY BUILDING, GATE- 04 RAIPUR
Website - www.cseb.gov.in Office Mail ID – secc.raipur@cspc.co.in Phone No. 0771-2574800, 2574801 Fax No. 0771-2574805

NOTICE INVITING TENDER THROGU E-BIDDING

E-tenders are invited against **NIT No. 10-10/Pur./TR-2024_54 date 16-10-2024** for hiring 01 pick-up/utility vehicle for following work.

RFx no - 8100039726

Awarding contract for Hiring of Light Commercial Vehicle (Pickup) or Equivalent (1.70-2.20 Ton Capacity) for **AE (HT Maintenance) Under EE City Dn. West, CSPDCL Raipur.** Vehicle With 01 No. Additional driver. Vehicle should be commercial tax paid, vehicle capacity 1.7 to 2.2 ton pick-up/ utility vehicle. All running expenditure of vehicle will be borne by contractor. The contract work will be as per guidelines of CSPDCL. The pick-up 1.7 to 2.2 ton vehicle is not older than 03 years having total run not exceeding 100000 km. will be hired for a period of 03 years. Normally the period of contract will be **Three year** on the monthly rate basis. The CSPDCL reserves the right to extend the term of contract period for further **01 years** at the same rate, terms & condition on mutual understanding between CSPDCL & contractor. GST will be paid Extra on production of actual documentary evidence Tentative Contract value will be **Rs. 2578409/- aprox excluding GST.**

Details of Tender, Technical Specifications, Terms and Conditions etc are available on our website www.cseb.gov.in, www.cspdcl.co.in and **ebidding http://ebidding.cspcl.co.in:50724/irj/portal.** Last date and time of submission of bid is on**05-11-2024** up to **01:30 P.M.** and due date of opening is on **05-11-2024** at **02:00 P.M.** The Tender document can also be downloaded from CSPDCL's official website mentioned above. The cost of required Tender fee of **Rs. Rs. 2000/- (Incl.GST)** may be deposited through online before up to **01:30 P.M.** which is not refundable. An amount of **(Rs. 25800/-)** 1% of the Tender value towards EMD has to be deposited by the Contractor in the E-biding portal through online. The Notice for extension of Due Date of tender submission/opening/ corrigendum/ amendment, if any, to the tender document will be displayed on CSPDCL's official websites as mentioned above.

Superintending Engineer
City Circle-I, CSPDCL: Raipur

SAVE ELECTRICITY

SAMVAD- 41815/ 3

कार्यालय, नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)
नया मुख्यालय भवन गांधी चौक, रायपुर फोन नं.2535780, 90, फैक्स - 0771-2227395.
E-mail- कार्यालय का ee.electrical.rmc@gmail.com

निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक /272 / विद्युत/न.पा.नि./2024 दि. 17/10/2024

नगर पालिक निगम, रायपुर, विद्युत विभाग द्वारा निम्नांकित कार्य हेतु लो.नि.वि. एकल खिड़की प्रणाली में सक्षम श्रेणी में पंजीकृत अ वर्ग विद्युत ठेकेदारों / फर्मो से मुहरबंद निविदायें दो लिफाफा पद्धति के माध्यम से स्पीड पोस्ट से दिनांक 08/11/2024 को संध्या 4:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है, प्राप्त सभी निविदाएँ उपस्थित, निविदाकारों अथवा उनके अधिकृत प्रतिनिधियों के सम्मुख दिनांक 08/11/2024 को संध्या 05:00 बजे खोली जाएगी। कार्य हेतु निविदा प्रपत्र-अ निर्धारित राशि रु. 750.00 जमा कर दिनांक 06/11 2024 तक नगर पालिक निगम, विद्युत विभाग, मुख्यालय से कार्यालीन समय में प्राप्त की जा सकती है। कार्य का विवरण :- कामरेड सुधीर मुखर्जी वार्ड क्र. 54 अंतर्गत नवरंग चौक में 01 नग 12 मीटर ऊंचाई के हाईमास्ट प्रदाय व स्थापना कार्य बाबत। अनुमानित लागत राशि रू. 3,82,301.00, अमानती राशि रू. 2870.00।

नोट
1. निविदा प्रपत्र के लिये आवेदन के साथ सक्षम श्रेणी में पंजीकृत वैध जीवित पंजीयन एवं विद्युत अनुज्ञा प्रपत्र देना होगा।
2. निविदा के अन्य नियम एवं शर्ते निविदा प्रपत्र के साथ दे दी जायेगी।

घरो से निकलने वाले सूखा और गीला कचरा को सफाई मित्र (वाहन) को देवे।

कार्यपालन अभियंता (विद्युत)
नगर पालिक निगम, रायपुर

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15078/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 15-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15078
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445A00232** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **REENA NEMANI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DILIP NEMANI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GAURAV AHUJA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI KULDEEP SINGH AHUJA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./15164/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15164
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445I0093A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **RAMNATH SAHU, ASHISH KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LT. SADARAM SAHU, RAMNATH SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHRI ASHISH KUMAR SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O SHRI RAMNATH SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत हक त्याग**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com

पत्र क्र./14799/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2024
रायपुर, दिनांक 15-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 14799
वार्ड का नाम- 50 - रानी दुर्गावती वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 50 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR445O00536** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **REBECCA SHARON DAVID** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DIVYA SYAM SUDHEER BANDI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SMT. RENUKA AMIT BANSAL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SHRI AMIT MADANLAL BANSAL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री राकेश शर्मा
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15270/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15270
वार्ड का नाम- 61 - श्यामप्रसाद मुखर्जी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 61 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR663W00173** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MURTI BAI SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LALLU RAM SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **1) DILIP MAGRAJ S/O DARSHA MAGRAJ 2) PAYAL MAGRAJ** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O DILIP MAGRAJ** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15265/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15265
वार्ड का नाम- 60 -चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652D00331** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **SURENDRA KUMAR UADAV** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAJESHWAR YADAV** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **BHAVNA PANJWAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MANOJ KUMAR PANJWANI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15221/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15221
वार्ड का नाम- 60 -चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652G00922** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **NEHA RAZA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **ABDUL JUBAID** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TARUNNUM ANJUM QURAISHI** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MOHAMMAD ZAFAR QURAISHI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15269/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15269
वार्ड का नाम- 60 -चन्द्रशेखर आजाद वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 60 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR652G0712A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **TARNNUM BEGUM** पिता/पति, श्री/श्रीमती **MUSTAK KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **SHABANA PARWEEN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O FAIZ AHMED** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-6)
आई.एस.बी.टी. चतुर्थ तल, रावणभाठा, रायपुर
Email ID - rmczone6@gmail.com

पत्र क्रं./15268/न.पा.नि./जोन क्रं. 6/2024
रायपुर दिनांक : 17-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15268
वार्ड का नाम- 65 -महामाया मंदिर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 65 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR662E00558** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **RAJKUMAR DEWANGAN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **LATE SIYARAM DEWANGAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **PAWAN KUMAR** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O RAJKUMAR SONI** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं. - 6
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15228/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 16-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15228
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801C0107A** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **NIRMALA NISHAD** पिता/पति, श्री/श्रीमती **BIHARI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **KHILESHWARI SHRIVAS** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KHILENDRA SHRIVAS** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **मलमा बिक्रीनामा व शपथ पत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /15231/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 16-10-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 15231
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801O00084** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **CHINKI KUMARI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **SUDHIR KUMAR SINGH** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **GOVIND MISHRA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMASHANKAR MISHRA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छतीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर (छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि सामान्य आवास योजनांतर्गत कॉलोनी डूमरतराई **फेस-।** जिला रायपुर में स्थित **एच.आई.जी. फ्लैट क्र. 505, ब्लॉक नं.-03. पंचम तल, श्री बिबेक रंजन मोहती, पिता स्व. श्री चुडामणी मोहती,** को स्ववित्तीय आधार पर आबंटित किया गया है। आबंटी द्वारा उक्त फ्लैट की लीजडीड **दिनांक** 01/09/2016 पंजीकृत कराने के उपरात फ्लैट की पूर्ण राशि जमा कर **दिनांक** 06/05/2017 को आधिपत्य आदेश प्राप्त कर लिया है, वर्तमान में आवटी **श्री बिबेक रंजन मोहती, पिता स्व. श्री चुडामणी मोहती, निवासी प्रकोष्ठ भवन क्रमांक- 505, ब्लॉक नं-03, हिमालयन हाईट्स, डुमरतराई फेस-।, रायपुर (छ.ग.)- 492001** द्वारा उक्त फ्लैट को **सुश्री रानी पठोदिया, पिता श्री राम बिलास पठोदिया, निवासी- अभिषेक नगर, रसलिया, होशंगाबाद (म.प्र.) 461001** के नाम से विक्रय करने के लिये इस कार्यालय में अपना आवदेन प्रस्तुत कर अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) की माग की गई है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय व अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय सस्था को कोई आपत्ति हो तो इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

कलेक्टर ने शिक्षा,आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग और खेल विभाग की ली मासिक समीक्षा बैठक

जिला शिक्षा अधिकारी व मिशन समन्वयक अपार आईडी प्रोग्रेस की करें रेगुलर मॉनिटरिंग

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) - कलेक्टर रोहित व्यास ने आज शिक्षा, आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग और खेल विभाग की मासिक समीक्षा बैठक ली। जिसमें कलेक्टर ने शिक्षा विभाग को अपार आईडी को लेकर विशेष फोकस करने की बात कही तथा जिला शिक्षा अधिकारी के साथ-साथ ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट किया कि अपार आईडी के लिए लगने वांछित दस्तावेजों, जिन विद्यार्थियों के पास नहीं है उन्हे शीघ्र अपडेट कराकर शत प्रतिशत अपार आईडी बनाने की प्रक्रिया को पूरा किया जाए ताकि राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 के तहत विद्यार्थियों के समग्र विकास और शैक्षिक प्रगति को ट्रैक करने के साथ ही एक राष्ट्र एक छात्र आईडी की परिकल्पना को मूर्त रूप प्रदान किये जा सके । उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी, जिला मिशन समन्वयक को विकासखंड, संकुल और शाला स्तर पर प्रक्रिया की सतत निगरानी के निर्देश दिये। इसके साथ ही ब्लॉक एजुकेशन ऑफिसर को अपने क्षेत्र के पीएम श्री स्कूल के अनिवार्य रूप से साप्ताहिक भौतिक निरीक्षण के निर्देश दिये। इसके साथ ही बैठक में जाति-निवास प्रमाण पत्र व उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के सम्बंध में में भी विस्तृत चर्चा की गई।

खेल विभाग से चर्चा में कॉलेज ग्राउण्ड सूरजपुर में प्रस्तावित सिंथेटिक एथलेटिक ट्रैक (4 लेन) पर जानकारी ली गई। जिसके प्रस्ताव के संबंध में विस्तृत चर्चा की गई। इसके साथ ही योजनाबद्ध तरीके से इसे शीघ्र पूर्ण कराने के निर्देश खेल अधिकारी को दिये गये। इसके साथ ही खेलो इंडिया योजना के तहत सूरजपुर के ग्राम पंचायत हर्राटिकरा में ''खेलो इंडिया लघु केन्द्र फुटबॉल खेल प्रशिक्षण'' संचालन पर चर्चा की गई । जहां वर्तमान में चयन ट्रॉयल के माध्यम से चयनित 19 बालिका व 20 बालक सहित कुल 39 खिलाड़ी निःशुल्क फुटबॉल खेल का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहें हैं।

आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग से चर्चा के दौरान कलेक्टर ने विभागीय योजनाओं, एकलव्य आदर्श आवासीय विद्यालय भवन निर्माण कार्य की अद्यतन स्थिति, अनुसूचित जाति विकास प्राधिकरण के स्वीकृत कार्यों की जानकारी, आदिवासी कन्या परिसर, आदिवासी सांस्कृतिक दलों की सहायता तथा पोस्ट मैट्रिक छात्रवृत्ति के ऑनलाइन भुगतान पर चर्चा की गई। इसके साथ ही बैठक में सरगुजा क्षेत्र आदिवासी विकास प्राधिकरण के विषयों में विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक में जिला शिक्षा अधिकारी श्री ललित राम पटेल, सहायक आयुक्त आदिवासी विभाग श्री संकल्प साहू, खेल अधिकारी श्रीमती आरती सिंह व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

जिले के समस्त ग्राम पंचायतों में चलाया गया आयुष्मान कार्ड महाअभियान

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य एवं भारत योजना डिजिटल मिशन के अंतर्गत आज जिले के समस्त ग्राम पंचायतों में आयुष्मान कार्ड महाअभियान चलाया गया। जिसमें स्वास्थ्य कार्यकर्ता, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिका शिक्षक , आयुष्मान ऑपरेटर व अन्य संबंधित कर्मचारियों को कलेक्टर श्री रोहित व्यास द्वारा महा अभियान को सफल बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिये गए है। आयुष्मान कार्ड के लिए आवश्यक दस्तावेज राशन कार्ड, आधार कार्ड एवं मोबाइल नंबर अनिवार्य है। जनपद पंचायत ओड़गी में नेटवर्क विहीन पारा व मोहल्ले को नेटवर्क क्षेत्र में लाकर बनाया गया आयुष्मान कार्ड।

कलेक्टर ने सरायपाली के कन्या छात्रावास, स्कूल अस्पताल एवं छात्रावास का लिया जायजा

महासमुंद(विश्व परिवार)। कलेक्टर विनय कुमार लंगेह ने आज सरायपाली विकासखण्ड अंतर्गत कन्या छात्रावास, स्कूल, हॉस्पिटल एवं निर्माणाधीन आदिवासी छात्रावास का औचक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने कन्या छात्रावास में छात्राओं से बातचीत कर उनकी समस्याओं और जरूरतों के बारे में जानकारी ली। उन्होंने छात्राओं के लिए भोजन, पानी और स्वच्छता की स्थिति की समीक्षा की। छात्राओं से पढ़ाई और अन्य सुविधाओं के बारे में फीडबैक लिया। स्कूल के निरीक्षण के दौरान उन्होंने शिक्षकों की उपस्थिति और कक्षाओं का अवलोकन किया। स्कूल में शिक्षा के स्तर और अन्य गतिविधियों को पाठ्यक्रम में शामिल करने के निर्देश दिए। इसी तरह उन्होंने 100 बिस्तर अस्पताल की सुविधाओं का जायजा लिया। जहां चिकित्सा सुविधाओं और दवाओं की उपलब्धता की जांच की। डॉक्टरों और स्टाफसे रोगियों के इलाज और व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी ली। उन्होंने यह भी कहा कि अस्पताल में आने वाले मरीजों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित किया जाए। निर्माणाधीन आदिवासी हॉस्टल के निर्माण कार्य की प्रगति का निरीक्षण किया और गुणवत्ता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। ठेकेदार और अधिकारियों को समय पर कार्य पूरा करने के निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर ने सरायपाली गौरव पथ के निर्माण कार्य का जायजा लिया। उन्होंने निर्माण की धीमी प्रक्रिया पर नाराजगी जताते हुए समय-सीमा में निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं। कलेक्टर ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि किसी भी तरह की कमी को तत्काल दूर किया जाए और नियमित निगरानी रखी जाए ताकि सुविधाओं में सुधार हो सके और बेहतर सेवाएं मिलें।

आत्मानंद स्कूल के बाथरूम में मिली ई-रिक्शा चालक की रक्तरंजित लाश

बिलासपुर(विश्व परिवार)। स्वामी आत्मानंद स्कूल के बाथरूम में ई- रिक्शा चालक की रक्तरंजित लाश मिली है. मृतक के सिर पर पत्थर मारा गया था. मृतक रात में ई- रिक्शा चलाने निकला था, और सुबह उसकी रक्तरंजित लाश मिली है. घटना की सूचना पर सरकंडा पुलिस मौके पर पहुंच कर जांच में जुट गई है। लिंगियाडीह राजकिशोर नगर निवासी सत्यनारायण यादव किराए के मकान में घर से अलग अकेले रहता था. वह ई-रिक्शा चलाता था. मंगलवार की सुबह चिंगराजपारा के अमरैया चौक स्थित स्वामी आत्मानंद स्कूल के अंदर बाथरूम में उसकी खून से सनी लाश पड़ी थी. सुबह स्कूल खुलने पर घटना की जानकारी हुई, जिसके बाद पुलिस को सूचना दी गई. सूचना पाकर पहुंची पुलिस ने आसपास के लोगों की मदद से युवक की पहचान ई-रिक्शा चालक के रूप में की, जिसके बाद उसके परिजन को बुलाया गया. घटनास्थल के पास ही उसकी ई-रिक्शा भी मिली है. बीती रात वह रिक्शा चलाने के लिए निकला था, पुलिस अब यह पता लगाने की कोशिश कर रही है कि सत्यनारायण यहां कैसे पहुंचा. रात में आखिरी बार वह किन लोगों के साथ था. स्कूल व आसपास लगे सीसीटीवी कैमरा की मदद से आरोपियों की पहचान कर उनकी तलाश की जा रही है.

राज्योत्सव 2024 कार्यक्रम का सुव्यवस्थित ढंग से आयोजन किये जाने के संबंध में बैठक हुए संपन्न

राज्योत्सव कार्यक्रम के लिए अधिकारियों को सौंपे गए दायित्व

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-जिला कार्यालय सूरजपुर के सभाकक्ष में राज्योत्सव 2024 के अवसर पर राज्योत्सव कार्यक्रमों का सुव्यवस्थित ढंग से आयोजन किये जाने के लिए कलेक्टर श्री रोहित व्यास की अध्यक्षता में जिला कार्यालय प्रमुखों के साथ बैठक संपन्न हुई। इस वर्ष राज्योत्सव स्टेडियम ग्राउंड सूरजपुर में 5 नवंबर 2024 को एक दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। जिला स्तर पर कार्यक्रम किये जाने के लिए अधिकारियों को दायित्व सौंपे गए है। जैसे कि इन दायित्वों में कार्यक्रम स्थल पर विभिन्न विकास विभाग की विभागीय प्रदर्शनी का आयोजन किया जाए। विभिन्न विभाग में विशेष उपलब्धियों को विशेष रूप से प्रदर्शित किया जाए। कार्यक्रम स्थल पर राज्य शासन के विभिन्न विभागों की महत्वपूर्ण योजनाओं एवं सफल परियोजनाओं का प्रदर्शन किया जाए। विगत वर्षो की उपलब्धियों को भी प्रदर्शित की जाए। शासन के कल्याणकारी योजनाओं से हितग्राहियों को कार्यक्रम में लाभविन्त किया जाए। सांस्कृतिक कार्यक्रम व दलों की व्यवस्था, मंच व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था, आवास एवं भोजन व्यवस्था, आमंत्रण पत्र एवं वितरण की व्यवस्था, फूल माला एवं पुष्प गुच्छा की व्यवस्था, पुरस्कार/स्मृति चिन्ह/बैज व प्रमाण पत्र की व्यवस्था, मंच संचालन, मंच पर स्वल्पाहार की व्यवस्था, प्रचार-प्रसार, नियंत्रण कक्ष व चिकित्सा की व्यवस्था, पेयजल एवं साफ-सफाई की व्यवस्था, सुरक्षा शांति एवं यातायात व्यवस्था, बेरिकेड्स की व्यवस्था, पंडाल/कुर्सी एवं बैठक व्यवस्था, वीडियोग्राफी एवं फोटो ग्राफी का व्यवस्था एवं समस्त विभाग द्वारा राज्योत्सव स्थल पर विभागीय विषय एवं योजनाओं पर आधारित विभागीय प्रदर्शनी लगाई जाएगी।

ग्राम रामनगर में श्रीमद् भागवत कथा आज से आयोजन

कलश एवं शोभा यात्रा में हजारों की संख्या में श्रद्धालु पहुंचे पूरा क्षेत्र हुआ भक्तिमय

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार) नौ दिवसीय आयोजित श्रीमद् भागवत कथा की कलश यात्रा में हजारों श्रद्धालुओं ने भाग लेकर पूरा क्षेत्र को भक्ति भाव में डुबो दिया ।

ग्राम रामनगर की मिनी स्टेडियम मैदान में वृंदावन से पधारे कथावाचक विनयकांत त्रिपाठी के मार्गदर्शन में चार ग्रामों के क्रमशः रामनगर ,रनियाडीह, सरस्वतीपुर ,रामपुर के ग्रामीणों द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित 9 दिवसीय श्रीमद् भागवत कथा का आज प्रथम दिवस कार्यक्रम में शोभा यात्रा एवं कलश यात्रा में हजारों की संख्या में महिला पुरुष एवं बच्चों ने बाढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हुए 3 किलोमीटर पैदल चल कर रेणुका नदी से जल लेकर

पुनः शिव मंदिर पहुंचे और राधे-राधे, कृष्णा कृष्णा ,जय श्री राम के उद्घोष से पूरा क्षेत्र भक्ति भाव के सागर में हिचकोले लेने लगा ।आज श्रीमद् भागवत कथा का प्रथम दिवस था ।कल 18 अक्टूबर को मंगल चरण श्रीमद् भागवत कथा का प्रारंभ, 19 अक्टूबर को परीक्षित जन्म ,महाभारत चरित्र , भगवान का 12 अवतार कथा ,कपिल उपन्यास ,20 अक्टूबर को ध्रुव चरित्र, जड़ भरत चरित्र,

प्रहलाद चरित्र ,नरसिंह अवतार, 21 अक्टूबर को समुद्र मंथन ,बाली वामन चरित्र ,श्री राम जन्मोत्सव, 22 अक्टूबर को श्री कृष्णा बाल लीला ,गोपी उद्धव संवाद, रुकमणी विवाह उत्सव ,23 अक्टूबर को भगवान की विवाह की कथा ,24 अक्टूबर को गुरुओं की कथा, सुदामा चरित्र, फूल होली, सुखदेव पूजन एवं 25 अक्टूबर को प्रातः 9 बजे से हवन पूर्णाहुति एवं प्रसाद भंडारा का आयोजन किया गया है। है दिवसीय इस आयोजन में प्रतिदिन भंडारा का आयोजन किया गया ।इस पूरे आयोजन को सफल बनाने में सत्यनारायण जायसवाल, गीता जायसवाल, रुकमणी सिंह, बाबूलाल यादव, दौलत राम जयसवाल, राजवंश राजवाड़े, राजेश जायसवाल, रश्मि जायसवाल, गोवर्धन केवट, संतोष पावले ,राजकुमार कुशवाहा, सुरेश जयसवाल, गणेश जायसवाल, भूपेश प्रजापति, कुकीज, भूपेश प्रजापति, जगन्नाथ यादव ,राहुल जायसवाल, सुनील श्रीवास्तव, जवाहर सिंह आदि ग्रामीण जनप्रतिनिधि लगे हुए हैं ।

संक्षिप्त समाचार

सिर कुचलकर हत्या करने वाले सीरियल किलर गिरफ्तार

बिलासपुर(विश्व परिवार)। पुलिस ने एक सीरियल किलर को पकड़ा है। आरोपी 17 साल पहले अपनी पत्नी की हत्या की, फिर अब 2 साल के अंदर में सेम पैटर्न में 2 लोगों को मार डाला। बताया जा रहा है कि आरोपी हथियार का उपयोग नहीं करता। पत्थर से सिर कुचलता है। इस बार तीन लोगों ने मिलकर एक युवक को मारा है। मामला सरकंडा थाना क्षेत्र का है। मिली जानकारी के मुताबिक आरोपियों ने सरकंडा क्षेत्र के लिंगियाडीह दुर्गा मंदिर के पास रहने वाले सत्यनारायण की हत्या की है। सत्यनारायण प्रधान ई-रिक्शा चलाता था। अपने परिवार से अलग किराए के मकान में रहता था। मंगलवार की सुबह चिंगराजपारा स्थित स्वामी आत्मानंद स्कूल में उसकी खून से लथपथ लाश मिली थी। बिलासपुर में ई-रिक्शा चालक की हत्या केस की गुत्थी को पुलिस ने सुलझा लिया है। ई-रिक्शा से ठोकर लगने पर बदमाशों से विवाद हो गया। इस दौरान बदमाशों ने पत्थर से सिर कुचलकर हत्या की थी। वारदात में शामिल एक आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है, वहीं 2 अन्य लोग फरार हैं। पुलिस की जांच में पता चला कि सत्यनारायण का चिंगराजपारा में रहने वाले प्रदीप सिंह ठाकुर (36) से विवाद हुआ था।

भदरापारा क्षेत्र की सड़कों पर गड्ढों की भरमार

कोरबा(विश्व परिवार)। बालकोनगर जोन के अंतर्गत वार्ड संख्या 35 भदरापारा में मुख्य सडक पर गड्ढों की उपस्थिति ने लोगों की परेशानियों को बढ़ाकर रख दिया है। रात के साथ-साथ दिन में भी गड्ढों के कारण आवागमन में मुश्किल हो रही है। सडकों की बदहाली के बारे में जोन के साथ-साथ साकेत के अधिकारियों को पूरी जानकारी है लेकिन सुधार की दिशा में कुछ नहीं हो रहा है। प्रदेश के बड़े और धनाढ्य नगर निगमों में कोरबा की गिनती होती है लेकिन देखने को मिल रहा है कि लगभग सभी जोन में सडकों की बदहाली हर किसी के लिए परेशानी का सबब बना हुआ है। बालकोनगर जोन के अंतर्गत आने वाले अन्य वार्ड भी इसी कड़ी में शामिल हैं लेकिन बदहाली का आलम भदरापारा वार्ड में कुछ ज्यादा बना हुआ है। मुख्य मार्ग रिंग रोड से भीतर को जाने वाली सडक पर जहां-तहां गड्ढों की उपस्थिति कायम है। कुछ गड्ढों को देखकर लगता है कि सडक को काट दिया गया है। हालात इस तरह के हैं कि दोपहिया किसी तरह निकल जाते हैं लेकिन चारपहिया और अन्य गाडियों को बचते-बचाते या फिर गड्ढों पर जम्प करते हुए आगे जाना होता है। ऐसे में वाहनों के कलपुर्जे टूट-फूट का शिकार हो रहे हैं। बार-बार अवगत कराने के बाद भी इस तरफ किसी प्रकार के कदम नहीं उठाए जाने समझ से परे है।

माता रानी का भव्य जागरण कार्यक्रम आयोजित

कोरबा(विश्व परिवार)। शहर के बुधवारी में क्वांर नवरात्र का पर्व धूमधाम से मनाया गया। पूरे नौ दिनों तक मां दुर्गा की आराधना की गई। मां की प्रतिमा विसर्जित करने के बाद समिती के द्वारा माता रानी का भव्य जागरण का आयोजन किया गया। एमपी के अमरकंटक से आए देवी जागरण ग्रुप ने माता के भजनों से भक्तों को मंत्रमुग्ध कर दिया। नगर निगम के वार्ड नंबर 21 बुधवारी बाजार के गणेश पंडाल में मंगलवार की रात मां दुर्गा का भव्य जागरण का आयोजन किया गया। क्वांर नवरात्र के समापन के बाद स्थानीय समिती की तरफ से यह आयोजन किया गया। पूरे नौ दिनों तक यहां नवरात्र का उत्साह देखने को मिला। मां दुर्गा की प्रतिमा का विसर्जन करने के बाद यहां रात्री जागरण का आयोजन किया गया। एमपी के अमरकंटक से जूनियर अनुराधा प्रीति रजक और बृजकिशोर गुप्ता की टीम ने देवी जागरण के कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

केसीसी लोन: किसानों को झांसे में लेकर किशन ने खेला करोड़ों का खेल

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिले में केसीसी लोन के नाम पर एक बड़ा गड़बड़ झाला उजागर होने की सुगबुगाहट है। किशन नाम के शख्स ने पूर्व के वर्षों में एक विधायक से नजदीकी का पूरा-पूरा फायदा उठाया और किसानों को झांसे में लेकर उनकी जमीनों के एवज में और बहुत सी जमीनों को पटवारी से मिलकर दो फसली का दस्तावेज बनवाकर निजी बैंक से 400 से 500 किसानों के नाम पर केसीसी लोन उठाया है। उसकी इस फरेब का शिकार हुए लोगों की मानें तो केसीसी लोन लेने के बाद उसके द्वारा किश्त भुगतान नहीं किया जा रहा है और उसका भार संबंधित किसानों पर पड़ने लगा है, ऐसे किसान काफी परेशान हैं। पीड़ित किसानों ने पुलिस में शिकायत करने का मन बना लिया है। हालांकि किशन के इस रवैया से लोन देने वाला बैंक भी खासा परेशान है। केसीसी लोन का यह खेल लगभग 8 से 10 करोड़ का बताया जा रहा है। इस मामले की तह तक जाकर जल्द ही बड़ा खुलासा किया जाएगा।

संपादकीय

क्वॉड के गठन का प्रस्ताव

दुनिया क्वॉड को इसी रूप में जानती है कि यह इस समय अमेरिका की तरफ से चीन को घेरने के लिए बनाए जा रहे अनेक समूहों में से एक है। इसलिए इशिबा ने जो कहा, उससे भारत के अलावा किसी को परेशानी नहीं हुई है। जापान के नए प्रधानमंत्री शिगेरू इशिबा चीन के प्रति सख्त रुख के लिए जाने जाते हैं। प्रधानमंत्री बनते ही उन्होंने अपनी विदेश संबंधी प्राथमिकताएं वॉशिंगटन स्थित थिंक टैंक- हडसन इंस्टिट्यूट द्वारा प्रकाशित एक लेख में बताई। इसमें उन्होंने चीन का मुकाबला करने के लिए एशियाई नाटो बनाने का आह्वान किया। इशिबा ने कहा कि एशियाई नाटो बनाने की जरूरत इस तथ्य से उपजी है कि अमेरिका की ताकत में तुलनात्मक कमी आई है। तो उन्होंने सुझाव दिया कि चार देशों- अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, जापान और भारत- के समूह क्वॉड को एशियाई नाटो की भूमिका ग्रहण करनी चाहिए। इस बयान से भारत असहज हुआ है। विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने इस पर कहा कि भारत एशियाई नाटो का समर्थन नहीं करता। वॉशिंगटन में एक कार्यक्रम के दौरान जयशंकर ने स्पष्ट किया कि भारत जापान की तरह सैन्य गठबंधनों पर निर्भर नहीं है और क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए उसकी अपनी अलग रणनीति है। कहा- हम वैसे किसी रणनीतिक ढांचे के बारे में नहीं सोच रहे हैं। क्वॉड के गठन का प्रस्ताव मनमोहन सिंह सरकार के जमाने में ही आया था। लेकिन भारत ने ऐसे किसी समूह में शामिल होने से इनकार किया, जिसकी स्पष्ट पहचान किसी अन्य देश (यानी चीन) के विरुद्ध हो। नरेंद्र मोदी सरकार ने इस नीति को बदल कर क्वॉड का सदस्य बनने का निर्णय लिया। लेकिन तब से वह यह कहने में काफी ऊर्जा लगाती रही है कि यह समूह किसी देश के खिलाफ नहीं है, बल्कि इसका सकारात्मक एजेंडा है। कोरोना महामारी के दौर में ऐसा एजेंडा दिखाने के लिए वैक्सीन सहयोग की बात प्रचारित की गई। लेकिन बाकी तीन देशों की ऐसी कोशिश नहीं रही है। दुनिया क्वॉड को इसी रूप में जानती है कि यह इस समय अमेरिका की तरफ से चीन को घेरने के लिए बनाए जा रहे अनेक समूहों में से एक है। इसलिए इशिबा ने जो कहा, उससे भारत के अलावा किसी को परेशानी नहीं हुई है। बल्कि सवाल यह उठा है कि भारत ने खुद को अमेरिका की एशिया-प्रशांत रणनीति से संबंधित किया है, तो फिर यह कहने से उसे गुरेज क्यों है?

कांग्रेस से तुम हो तुम से कांग्रेस नहीं

शकील अख़्तर

कांग्रेस ने नहीं समझा, दूर नहीं किया तो आगे भी उसे बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। कांग्रेस के मठाधीशों की यह कहानी लंबी है। लेकिन इसका तोड़ बहुत छोटा है। हाईकमान की सख्ती। क्षत्रपों को हमेशा बताते रहना कि कांग्रेस से तुम हो। तुम से कांग्रेस नहीं। कितने उदाहरण हैं। मध्यप्रदेश में तो कमलनाथ पागल ही हो गए थे। खुद को भावी मुख्यमंत्री लिखवाने लगे थे। बुरी तरह हरवाया मध्य प्रदेश। फिर बेटे को लेकर बीजेपी में जा रहे थे। लेकिन कांग्रेस अभी भी उन पर कोई एक्शन लेने की हिम्मत नहीं कर रही। हरियाणा में क्या हुआ? हरियाणा में क्या हुआ? कोई नहीं समझ पा रहा। कांग्रेस ईवीएम को दोष दे रही है। हो सकता है। ईवीएम हमेशा शक के दायरे में रही। और कांग्रेस ही नहीं खुद भाजपा ने इस पर कई बार ऊंगलियां उठाईं। भाजपा नेता जीवीएल नरसिम्हा राव ने % डेमोक्रेसी एट रिस्क! कैन वी ट्रस्ट अवर इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीन? % पूरी किताब लिख दी थी। भाजपा नेता लालकृष्ण आडवानी ने इसकी भूमिका लिखी थी। किताब में ईवीएम को पूरी तरह बेईमानी का जरिया बताया गया था। आडवानी और दूसरे भाजपा नेताओं ने पूरे देश में घूम घूम कर ईवीएम का विरोध किया था। यह 2009 के लोकसभा चुनाव के भाजपा की हार के बाद की बात है। कांग्रेस ने 2018 में इसके खिलाफ अपने राष्ट्रीय अधिवेशन (प्लेनरी) में प्रस्ताव पारित किया। अभी लोकसभा चुनाव के पहले भी सवाल उठाए। मगर इसे एक सबसे बड़ा मुद्दा बनाने का ज्यादा प्रयास कभी नहीं किया। मुद्दा उठाया। छोड़ दिया। अब हरियाणा की अविश्वसनीय हार के बाद फिर सवाल उठाया है। सही है। उठाना चाहिए। लेकिन कुछ सवाल खुद से भी करना चाहिए। एक, हरियाणा एक ऐसा राज्य था जहां कांग्रेसी बहुत दबंग थे। दस साल के भाजपा शासन में भी उनके कोई काम रुकते नहीं थे। कोई गिरफ्तार नहीं हुआ। किसी के यहां ईडी, इनकम टैक्स, सीबीआई के बड़े छापे कभी नहीं पड़े। जैसे उत्तरप्रदेश ,मध्यप्रदेश में कांग्रेस के कार्यकर्ता परेशान रहे वैसे हरियाणा में नहीं हुए। तो ऐसे राज्य में अफसर ईवीएम मशीनों से छेड़छाड़ की कितनी हिम्मत कर सकते हैं? और उस स्थिति में जहां खुद बीजेपी को जीत का यकीन नहीं हो। कांग्रेस जोश में बीजेपी पस्त फिर अफसरों की हिम्मत कैसे पड़ी? यह हम पहले भी लिख चुके हैं कि करने वाला तो आदमी होता है। और अगर उसे डर हो कि यह सब चीज नोटिस की जा रही है और कल गड़बड़ करने वाले को छोड़ा नहीं जाएगा तो वह गलत काम करने से डरेगा। हरियाणा में यह कैसे हुआ इसे कांग्रेस को अपनी भी एक उच्च स्तरीय कमेटी बनाकर समझाना पड़ेगा। चुनाव आयोग में तो जाएं। मगर खुद भी वन्स एंड फारएवर इस मुद्दे को हल करना होगा। जब 2018 में दिल्ली के कांग्रेस अधिवेशन में यह प्रस्ताव पारित किया गया था। ईवीएम के खिलाफ तब राहुल गांधी कांग्रेस के अध्यक्ष थे। हमने तब भी लिखा। 2019 कांग्रेस के लोकसभा हारने के बाद भी लिखा कि एक उच्चस्तरीय कमेटी जिसमें तकनीकी विशेषज्ञ हों, चुनाव आयोग के पूर्व आयुक्त हों, सुप्रीम कोर्ट के पूर्व जज हों, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी हों इन सबको लेकर बनाना चाहिए। कांग्रेस की अभी इतनी खराब स्थिति नहीं आई है कि उसे लोग नहीं मिलें। ऐसी कमेटी पूरी स्टडी करके रिपोर्ट लेकर आती है तो उसका असर होगा। सुप्रीम कोर्ट जाने का भी एक मजबूत आधार होगा। अभी भी बना सकती है। हरियाणा एक बड़ा आधार है। इससे माहौल भी बनेगा और एक बड़ा इश्यू सैटल होने में मदद भी मिलेगी। लेकिन सिर्फ इस एक मुद्दे पर अड़े रहने से कांग्रेस का कुछ फायदा होने वाला नहीं है। यह वही मसल होगी कि ज् दिल तो बढ़ता है तबीयत तो बहल जाती है! बीमारी का इलाज नहीं होगा। जब तक बीजेपी सरकार में है ईवीएम हटाने का कोई सवाल ही नहीं। वह हटाने ही नहीं देगी। इसके लिए कांग्रेस को विपक्ष को सरकार में आना होगा। इसी ईवीएम के असर को रोककर कम करके। अधिकारियों पर दबाव बनाकर कि खबरदार कोई गड़बड़ी करने की कोशिश की तो! लेकिन अब बस यही है कि कांग्रेस करती नहीं है। हरियाणा जहां उसके नेता, कार्यकर्ता इतने दबंग थे वहां नहीं कर पाए तो दूसरे राज्यों जैसे मान लो गुजरात ही है जहां कांग्रेसी सबसे ज्यादा कमजोर है वहां क्या कर पाएगी। राहुल ने हरियाणा में भी कहा और हार के बाद बुधवार को अपनी पहली प्रतिक्रिया में भी कहा मेरे बब्बर शेर! तो यह शेर जब हरियाणा में धांधली नहीं रोक पाए तो दूसरी जगह जहां इनका शेरपन कम होगा वहां कैसे रोकेंगे? राहुल को कांग्रेस को पाइंट पर आना चाहिए। राहुल ने हरियाणा में कुमारी सैलजा और भूपेन्द्र हुड्डा के स्टेज पर हाथ मिलवाते हुए कहा कि मेरे शेर कभी कभी लड़ जाते हैं। फिर इन्हें एक करवाना मेरा काम होता है। सुनने में यह डायलग अच्छा है। मगर बेमतलब। राहुल ने यह कोई पहली बार हाथ मिलवाए। राजस्थान जो ठीक इसी वजह से कांग्रेस हारी वहां भी ऐसे ही गहलोत और सचिन पायलट के हाथ मिलवाए थे। मध्य प्रदेश में भी कमलनाथ और ज्यतिरादित्य सिधिंया के। छत्तीसगढ़ में आखिरी समय में टीएस सिंहदेव को उप मुख्यमंत्री बनाया। उत्तराखंड में चुनाव से पहले हरीश रावत ने कैसे कैसे नाटक किए। जल समुद्र मगरमच्छ! पता नहीं कौन कौन से बिम्ब बनाकर खुद को पीड़ित बताया। पूरी जिन्दगी वे ऐसी ही राजनीति करते रहे। और जब रो रोकर मुख्यमंत्री बन गए तो कांग्रेस के नेताओं के ही फोन उठाना बंद कर दिए। 2016 में जब स्टिंग विवाद में हरीश रावत सुप्रीम कोर्ट से जीत गए तो हाई कमान ने हरीश रावत से विधानसभा भंग करके चुनाव करवाने को कहा। उनके पक्ष में सहानुभूति लहर थी। जीते जाते। मगर उस समय तक वे कांग्रेस के मठाधीश बन गए थे। क्यों मानते? नहीं माने। और फिर 2017 में जो चुनाव हुए उसके बाद से कांग्रेस उत्तराखंड में आई ही नहीं। कांग्रेस के मठाधीशों की यह कहानी लंबी है। लेकिन इसका तोड़ बहुत छोटा है। हाईकमान की सख्ती। क्षत्रपों को हमेशा बताते रहना कि कांग्रेस से तुम हो। तुम से कांग्रेस नहीं। कितने उदाहरण हैं। मध्यप्रदेश में तो कमलनाथ पागल ही हो गए थे। खुद को भावी मुख्यमंत्री लिखवाने लगे थे। बुरी तरह हरवाया मध्य प्रदेश। फिर बेटे को लेकर बीजेपी में जा रहे थे। लेकिन कांग्रेस अभी भी उन पर कोई एक्शन लेने की हिम्मत नहीं कर रही। हरियाणा में क्या हुआ? कई दिनों तक कुमारी सैलजा कोप भवन में बैठी रहीं। भाजपा और बीएसपी प्रचार करते रहे कि दलित का अपमान हुआ है। मगर सैलजा ने कांग्रेस के पक्ष में कुछ नहीं बोला। उल्टे चैनल चैनल जाकर रोती रहीं कि मुझे टिकट नहीं दिया। इन्चार्ज मुझसे बात नहीं करते हैं। हुड्डा के समर्थक अपने चुनाव प्रचार में बुलाते नहीं। दूसरे महासचिव रणदीप सुरजेवाला ने भी इसी राग को आगे बढ़ाया। मुख्यमंत्री बनना है। सैलजा को भी बनना। सुरजेवाला को भी भूपेन्द्र हुड्डा अटल बिहारी वाजपेयी का डायलग ले आएज् न टायर्ड हूं न रिटायर। डायलग भी अपने नहीं ला पाते। वह भी बीजेपी के। और सब मुख्यमंत्री बनने के लिए चैनल दर चैनल इंटरव्यू देने लगे। गोदी मीडिया की चांदी हो गई। तीनों के खूब इंटरव्यू लिए और गुटबाजी को खूब हवा दी। अब बीजेपी जीत गई। जिसकी उम्मीद खुद मोदी और अमितशाह को नहीं थी। सारे एक्जिट पोल, ग्राउन्ड रियलटी सब चीख चीख कर कह रहे थे कि बीजेपी गई। वह आ गई। क्या मतलब? विश्लेषण अभी बहुत होंगे। कांग्रेस भाजपा दोनों को करीब करीब बराबर वोट मिले हैं। 39- 39 प्रतिशत। भाजपा के केवल 0.8 (पाइंट आठ) प्रतिशत ज्यादा हैं। मगर भाजपा से नाराज लोगों का वोट बंटा। करीब 20 प्रतिशत वोट बाकी दलों जो सब भाजपा के खिलाफ लड़ रहे थे मिला। और वह अगर यह मान लें कि कांग्रेस के मैनेजमेंट के बाहर की चीज थी।

आलेख

भारत का कार्बन बाज़ार उत्सर्जन से निपटने और हरित प्रथाओं को प्रोत्साहित करने के लिए नई रूपरेखा

अशोक कुमार

भारत ने जलवायु परिवर्तन की समस्या से निपटने और अपने महत्वाकांक्षी जलवायु लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए, दो आवश्यक दिशानिर्देश जारी किए हैं, जो भारतीय कार्बन बाजार (आईसीएम) के भविष्य को आकार देंगे। ये अनुपालन व्यवस्था के लिए विस्तृत प्रक्रिया और मान्यता प्राप्त कार्बन सत्यापन एजेंसियों के लिए मान्यता प्रक्रिया और पात्रता मानदंड हैं। आशा है कि वे मिलकर कार्बन उत्सर्जन की मात्रा निर्धारित करने और कार्बन क्रेडिट के व्यापार को सुविधाजनक बनाने के भारत के प्रयासों को उत्प्रेरित करेंगे, जिससे देश अपनी जलवायु प्रतिबद्धताओं को अपनाएगा। भारत की जलवायु रणनीति, जलवायु परिवर्तन पर पेरिस समझौते के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (एनडीसी) में उल्लिखित है। भारत ने न केवल इसे पूरा किया है बल्कि अपने कई लक्ष्यों को निर्धारित समय से पहले ही पूरा कर लिया है। वर्ष 2016 में हस्ताक्षरित, पेरिस समझौते का उद्देश्य सदी के अंत तक वैश्विक तापमान वृद्धि को 2 डिग्री सेल्सियस से नीचे सीमित करना था। भारत ने शुरू में वर्ष 2005 के स्तर से वर्ष 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 33-35 प्रतिशत तक कम करने का वादा किया था। हालाँकि, भारत ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करते हुए इस लक्ष्य को समय से पहले ही प्राप्त कर लिया। अपनी महत्वाकांक्षाओं को आगे बढ़ाते हुए, 2021 में ग्लासगो में पार्टियों के सम्मेलन (सीओपी-26) में, भारत ने और भी अधिक आक्रामक लक्ष्य निर्धारित किए। इसने वर्ष 2070 तक शून्य कार्बन उत्सर्जन का लक्ष्य हासिल करने, वर्ष 2030 तक अपनी अर्थव्यवस्था की कार्बन तीव्रता को 45 प्रतिशत तक कम करने और उसी समय सीमा के भीतर गैर-जीवाश्म ईंधन स्रोतों से अपनी 50 प्रतिशत बिजली उत्पन्न करने का लक्ष्य निर्धारित किया था। इनमें से कुछ प्रमुख उपलब्धियां तय समय से पहले ही हासिल करके, भारत ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के वैश्विक प्रयास में नेतृत्व का प्रदर्शन किया है। लेकिन हम वहां कैसे पहुंचे? यहीं पर भारतीय कार्बन बाजार (आईसीएम) आता है। विचार सरल है- यदि कोई कंपनी अपने कार्बन उत्सर्जन को कम करती है, तो वह कार्बन क्रेडिट नामक कुछ अर्जित करती है, जिसे वह अन्य कंपनियों को बेच सकती है जो अपने उत्सर्जन को कम करने के लिए संघर्ष कर रही हैं। यह एक पुरस्कार प्रणाली की तरह है - जो कंपनियाँ पर्यावरण के लिए बेहतर काम करती हैं वे पैसा कमा सकती हैं, जबकि जिन्हें सुधार के लिए अधिक समय की आवश्यकता है वे अपने अतिरिक्त उत्सर्जन की भरपाई के लिए क्रेडिट खरीद सकती हैं। भारतीय कार्बन बाजार को एक व्यापक और पारदर्शी प्रणाली की आवश्यकता है जो आर्थिक विकास को गति देते हुए डीकार्बोनाइजेशन को बढ़ावा दे सके। भारतीय कार्बन बाजार, उत्सर्जन मूल्य निर्धारण पर बल देने के साथ, इस संतुलन को प्राप्त करने के लिए एक महत्वपूर्ण व्यवस्था प्रस्तुत करता है। कंपनियों को कार्बन क्रेडिट का व्यापार करने की अनुमति देकर, भारत का लक्ष्य सार्वजनिक और निजी दोनों हितधारकों को अपने कार्बन उत्सर्जन को सक्रिय रूप से कम करने के लिए प्रोत्साहित करना है, जिससे देश को लागत प्रभावी और बडे पैमाने पर डीकार्बोनाइज करने में सक्षम बनाया जा सके। भारतीय कार्बन बाजार की नींव वर्ष 2022 में ऊर्जा संरक्षण अधिनियम, 2001 में संशोधन के साथ रखी गई थी, जिसने सरकार को कार्बन क्रेडिट व्यापार योजना (सीसीटीएस) स्थापित करने का अधिकार दिया। यह योजना भारत को वैश्विक कार्बन बाजार प्रथाओं के साथ जोड कर कार्बन व्यापार को संचालित करने के लिए आवश्यक नियामक संरचना प्रदान करती है। सीसीटीएस, जून 2023 में पेश किया गया और दिसंबर 2023 में और संशोधित किया गया, जो दो प्रमुख व्यवस्थाओं- अनुपालन और ऑफसेट के माध्यम से कार्बन व्यापार के लिए एक संरचित दृष्टिकोण प्रदान करता है। अनुपालन व्यवस्था उन उद्योगों और क्षेत्रों को लक्षित करता है जिन्हें बाध्य संस्थाओं के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इन संस्थाओं को सरकार द्वारा निर्धारित विशिष्ट ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तीव्रता (जीईआई) लक्ष्यों को पूरा करना आवश्यक है। यदि कोई बाध्य इकाई अपने उत्सर्जन को निर्धारित लक्ष्य से कम कर देती है, तो उसे कार्बन क्रेडिट प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा, जिसका ट्रेडिंग एक्सचेंज पर कारोबार किया जा सकता है।

अभिधम्म का सम्मान: पाली साहित्य का एक शास्त्रीय रत्न

लेखक : प्रोफेसर रविन्द्र पंथ

एक वास्तविक अर्थ में, अभिधम्म में चार उल्लिखित श्रेणियाँ होती हैं: द्व. चेतना, द्वद्व. मानसिक अवस्थाएँ, द्वद्वद्व. भौतिक गुण, और द्व1. निब्बाना या अंतिम मुक्ति। - अभिधम्मत्थसंगहो, वयोवृद्ध अनुरुद्ध द्वारा।

अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ, भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से, 17 अक्टूबर 2024 को अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस और पाली की मान्यता का आयोजन कर रहा है। अभिधम्म पिटक, पाली कैनन का तीसरा भाग, बुद्ध की नैतिक मनोविज्ञान और दर्शन में गहराई से उतरता है, जो मन, उसके मानसिक कारकों और वास्तविकता को समझने के लिए एक जटिल ढांचा प्रस्तुत करता है। थेरवाद परंपरा के अनुसार, ये शिक्षाएं तावतींसा आकाश में दी गई थीं, जहाँ बुद्ध ने वर्षा ऋतु के दौरान तीन महीने बिताए, देवताओं और अपनी माता को अभिधम्म का उपदेश दिया। भाषाशास्त्रीय दृष्टि से, 'अभिधम्म' दो शब्दों 'अभि' (की ओर) और 'धम्म' (धारण करने के लिए) से मिलकर बना है, जिसे बुद्ध के उन्नत शिक्षाओं की ओर ले जाने के रूप में समझा जाता है। प्रसिद्ध पाली टिप्पणीकार वें. बुद्धघोष ने अभिधम्म को सबसे उन्नत या विशिष्ट सिद्धांत के रूप में वर्णित किया है, जो सुत्त पिटक की अधिक पारंपरिक शिक्षाओं से इसे अलग करता है। अभिधम्म चार प्रकार के परमार्थ धम्म (अंतिम वास्तविकताएँ) का कठोर विश्लेषण प्रस्तुत करता है: चित्त (चेतना), चेतसिका (मानसिक कारक), रूप (पदार्थ), और निब्बाना (अंतिम मुक्ति)। यह ढांचा साधकों को मानव अस्तित्व की जटिलताओं का अध्ययन करने की अनुमति देता है—मन और पदार्थ के अंत:क्रिया, दु:ख की प्रकृति, और निब्बाना की प्राप्ति के लिए मार्ग, या दु:ख के अवसान को समझने में। अभिधम्म पिटक सात ग्रंथों से मिलकर बना है, प्रत्येक बुद्ध की शिक्षाओं के विभिन्न पहलुओं का विस्तृत अध्ययन करता है। धम्मसंगणि पहला ग्रंथ है, जो अनुभव की दुनिया को बनाने वाली अंतिम वास्तविकताओं की गणना और परिभाषा करता है। विभंग इन वास्तविकताओं का और विश्लेषण करता है, जबकि धातुकथा और पुग्गलपञ्ञत्ति क्रमश: घटनाओं और व्यक्तियों के प्रकारों का वर्गीकरण प्रदान करते हैं। कथावत्थु विभिन्न दार्शनिक दृष्टिकोणों और विवादों को संबोधित करता है, जबकि यामक और पट्ठान उन जटिल शर्तीय संबंधों की गहराई में जाते हैं जो सभी घटनाओं के उत्पत्ति और निष्कर्ष को नियंत्रित करते हैं। पट्ठान को अभिधम्म का शिखर माना जाता है, यह एक विशाल ग्रंथ है जो मन और पदार्थ की पूरी दुनिया को नियंत्रित करने वाले चौबीस प्रकार के शर्तीय संबंधों का विस्तृत अध्ययन करता है। अभिधम्म में एक केंद्रीय अवधारणा शर्तीयता का सिद्धांत है, जो यह स्पष्ट करता है कि सभी घटनाएँ कैसे एक जटिल कारणों और परिस्थितियों के अंत:क्रिया के कारण उत्पन्न होती हैं और समाप्त होती हैं। हालांकि अभिधम्म अत्यधिक तकनीकी और सैद्धांतिक लग सकता है, इसका अंतिम उद्देश्य साधकों को वास्तविकता की सच्ची प्रकृति को समझने में सहायता करना है, जो पारंपरिक धारणाओं और अवधारणाओं के विकृतियों से मुक्त हो। सभी घटनाओं की अस्थायी, असंतोषजनक और निरात्मा स्वभाव को समझकर, व्यक्ति धीरे-धीरे आसक्तियों और लिप्तता को छोड़ सकता है, जिससे वह दु:ख से मुक्ति के मार्ग पर आगे बढ़ सकता है। हाल ही में, पाली को मराठी, प्राकृत, असमिया और बांग्ला के साथ क्लासिकल भाषा का दर्जा दिया गया है। यह प्राचीन मध्य इंडो-आर्यन भाषा भारतीय उपमहाद्वीप की है, जो बुद्ध धर्म की समृद्ध दार्शनिक और आध्यात्मिक परंपराओं के द्वार खोलती है। यह बौद्ध ग्रंथों और दर्शन की नींव है। अभिधम्म पिटक, पाली कैनन (त्रिपिटक) का एक प्रमुख खंड है, जो मन, चेतना और वास्तविकता की प्रकृति की जटिलताओं का अन्वेषण करता है। यह ग्रंथ बुद्ध धर्म के मनोवैज्ञानिक और दार्शनिक आधारों को समझने के लिए आवश्यक है। पाली का प्रभाव भारत से परे फैला हुआ है, खासकर दक्षिण-पूर्व एशिया में, जहां श्रीलंका, थाईलैंड, म्यांमार, लाओस और कंबोडिया जैसे देशों ने थेरवाद बौद्ध धर्म को अपनाया है। इन देशों में, पाली केवल एक धार्मिक भाषा नहीं है, बल्कि एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संपत्ति भी है। अभिधम्म दिवस पाली की समृद्ध विरासत और भारत की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक परिदृश्य में इसकी रणनीतिक महत्वता को याद दिलाने का एक अवसर है। जब द्बक्ष्ट पाली भाषा का जश्न मनाता है, तो यह भारत के लिए आर्थिक और कूटनीतिक अवसर भी प्रस्तुत करता है। द्बक्ष्ट को अपने एशियाई भागीदारों से मिले उत्साहजनक प्रतिक्रिया, जो भारत सरकार द्वारा पाली को क्लासिकल भाषा के रूप में मान्यता मिलने के बारे में उत्साहित हैं, इस बात का पर्याप्त प्रमाण है कि इस भाषा का भविष्य उवल है। पाली को अपनाने और बढ़ावा देने के माध्यम से, भारत इस गहन भाषा के जन्मस्थान के रूप में अपनी भूमिका को फ्रि से हासिल कर सकता है, जबकि दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने प्रभाव का विस्तार भी कर सकता है। द्बक्ष्ट का यह प्रयास न केवल बुद्ध की शिक्षाओं का सम्मान करता है, बल्कि यह सुनिश्चित करता है कि पाली में संचित ज्ञान फ्लता-फूलता रहे और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करता रहे। इसके अलावा, जैसे-जैसे दक्षिण-पूर्व एशियाई देश अपने बौद्धिक जड़ों के साथ फ्रि से जुड़ने की कोशिश कर रहे हैं, भारत पाली अध्ययन में संसाधन, विशेषज्ञता और नेतृत्व प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। यह न केवल भारत की भाषा पर अधिपत्य को मजबूत करता है, बल्कि पड़ोसी देशों के साथ कूटनीतिक संबंधों को भी मजबूत करता है।

मानवता-बिजनेस के संगम थे रतन टाटा

डा. अश्वनी महाजन

कोरस दुनिया की 9वीं सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी थी, जबकि टाटा स्टील 56वें स्थान पर थी। अधिग्रहण के बाद टाटा स्टील दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी बन गई। सामान्यतया जब भी कोई विदेशी किसी कंपनी का अधिग्रहण करता है तो वहां के लोगों और कर्मचारियों में उसके प्रति विरोध होता है, लेकिन इस अधिग्रहण में सबसे गौरवान्वित करने वाली बात यह थी कि कर्मचारियों ने इस बाबत खुशी जताई, क्योंकि टाटा को हमेशा कर्मचारी हित को सर्वोपरि रखने वाली कंपनी के रूप में जाना जाता है। इसी प्रकार दुनिया की सबसे बड़ी कार कंपनी फोर्ड का भी अधिग्रहण रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह ने किया, जिसके चलते टाटा मोटर्स ने भारत में ही नहीं, दुनिया में एक बड़ा स्थान बना लिया। वे हमेशा नीति निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक रहे हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि वे नीति निर्माताओं सहित अन्य लोगों को उनकी गलती के लिए टोक देते थे। रतन टाटा ने अपने दूरदर्शी नेतृत्व से मजदूरों और आम आदमी की वफादारी जीती भारत और दुनिया के सबसे महान उद्योग नेताओं में से एक पद्म विभूषण श्री रतन नवल टाटा का दु:खद निधन, केवल उद्योग जगत के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण राष्ट्र के लिए बड़ी क्षति है। आजादी से पहले टाटा समूह के संस्थापक श्री जमशेद जी टाटा ने देश में सबसे बड़े स्टील उद्योग की नींव रखी, जिसे आज हम टाटा स्टील के नाम से जानते हैं। जमशेद जी ने भारत के आम लोगों से एक-एक रुपया इक्विटी पूंजी के रूप में इकट्ठा करके इस बड़ी स्टील कंपनी का निर्माण करके यह दिखा दिया कि देशभक्त भारतीयों द्वारा ही राष्ट्र का निर्माण किया जा सकता है। श्री रतन टाटा का जीवन न केवल हमारे देश के, बल्कि पूरे विश्व के उभरते उद्यमियों के लिए प्रेरणा का स्रोत रहा है। लाभ कभी भी टाटा समूह का एकमात्र उद्देश्य नहीं रहा है और श्री रतन टाटा के दूरदर्शी नेतृत्व में श्रमिकों, गरीबों और दलितों की देखभाल हमेशा उनका मार्गदर्शक सिद्धांत रहा है। अपने दृढ़ निश्चय के साथ वे स्टील, ऑटोमोबाइल और विमानन सहित टाटा समूह के व्यवसायों को वैश्विक स्तर पर ले गए। उनके दूरदर्शी नेतृत्व ने हमेशा भारत को गौरवान्वित किया। टाटा समूह को अन्य व्यावसायिक घरानों से जो बात अलग बनाती है, वह यह है कि श्री रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह हमेशा से ही मजदूरों, लोगों और खासकर गरीबों के पक्ष में रहा है। उन्होंने एक बार

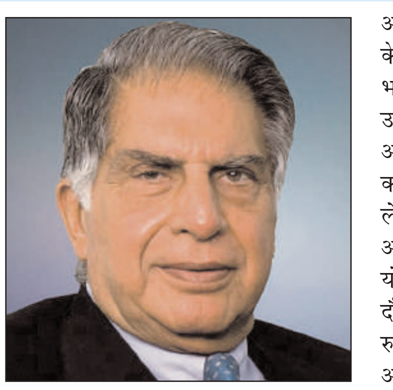

कहा था कि जब उन्होंने भारी बारिश में बस का इंतजार कर रहे एक गरीब परिवार को देखा, तो उनके दिमाग में एक ऐसी छोटी कार बनाने का विचार आया जो आम आदमी के लिए सस्ती हो और उन्होंने दुनिया की सबसे सस्ती और किफायती कार बनाने का कार्य पूरा किया। जहां उनकी व्यावसायिक सोच में आम आदमी और श्रमिक के प्रति संवेदनशीलता दिखाई देती है, उनके व्यवहार में सदैव देश के प्रति अथाह प्रेम भी झलकता है। उनके बारे में एक किस्सा प्रसिद्ध है कि जब पाकिस्तान द्वारा भेजे गए आतंकवादियों द्वारा मुम्बई के ताज होटल पर आक्रमण किया गया, तो अगले कुछ दिनों में पाकिस्तान के उद्योगपति उनसे मिलने के लिए भारत आए, लेकिन श्री रतन टाटा ने उनसे मिलने के लिए मना कर दिया। ऐसी स्थिति में जब भारत सरकार के एक तत्कालीन मंत्री ने उनसे उस मुलाकात को करने के लिए आग्रह किया, तो उन्होंने स्पष्ट रूप से यह कह दिया कि आप लज्जाहीन हो सकते हैं, लेकिन मैं नहीं। जब-जब देश पर आपत्ति आई, श्री रटन टाटा ने दिल खोलकर योगदान दिया। हाल ही में कोरोना काल के दौरान रतन टाटा ने न केवल 500 करोड़ रुपए का योगदान दिया, बल्कि इसके अलावा टाटा समूह ने कुल 1500 करोड़ रुपए का कुल योगदान कोविड संकट के दौरान दिया। यह राशि देश के किसी भी व्यावसायिक समूह से अधिक थी। लोगों को साथ लेकर चलने के सिद्धांत के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उनके एक वाक्य से स्पष्ट होती है, जिसमें उन्होंने कहा कि 'अगर आप तेज चलना चाहते हैं, तो अकेले चलें। लेकिन अगर आप दूर चलना चाहते हैं, तो साथ-साथ चलें।' हालांकि वे देश के सबसे बड़े औद्योगिक घराने के मुखिया थे, लेकिन जो भी उनसे मिलता था, उन्होंने कभी भी यह अहसास नहीं होने दिया। कुल मिलाकर वे विनम्रता की एक मिसाल के रूप में जाने जाते हैं। उन्होंने जब टाटा समूह का नेतृत्व संभाला तो उस समय अन्य औद्योगिक समूह विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार कर रहे थे। रतन टाटा ने अपनी एक अलग राह चुनी और अपने पूर्व स्थापित उद्योगों को गति देने के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कंपनियों का अधिग्रहण किया। अधिग्रहण के समय, वार्षिक इस्पात उत्पादन के मामले में कोरस, टाटा स्टील से चार गुना बड़ी थी। कोरस दुनिया की 9वीं सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी थी, जबकि टाटा स्टील 56वें स्थान पर थी। अधिग्रहण के बाद टाटा स्टील दुनिया की 5वीं सबसे बड़ी इस्पात उत्पादक कंपनी बन गई। सामान्यतया जब भी कोई विदेशी किसी कंपनी का अधिग्रहण करता है तो वहां के लोगों और कर्मचारियों में उसके प्रति विरोध होता है, लेकिन इस अधिग्रहण में सबसे गौरवान्वित करने वाली बात यह थी कि कर्मचारियों ने इस बाबत खुशी जताई, क्योंकि टाटा को हमेशा कर्मचारी हित को सर्वोपरि रखने वाली कंपनी के रूप में जाना जाता है। इसी प्रकार दुनिया की सबसे बड़ी कार कंपनी फोर्ड का भी अधिग्रहण रतन टाटा के नेतृत्व में टाटा समूह ने किया, जिसके चलते टाटा मोटर्स ने भारत में ही नहीं, दुनिया में एक बड़ा स्थान बना लिया। वे हमेशा नीति निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक रहे हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसा था कि वे नीति निर्माताओं सहित अन्य लोगों को उनकी गलती के लिए टोक देते थे।

संक्षिप्त समाचार

दिगंबरत्व की शान रहे, जैनों का अभिमान रहे संत शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज: मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज

नांदणी (विश्व परिवार)। विचित्र बाते प्रणेता मुनी श्री सर्वार्थ सागर जी महाराज ने शरदपूर्णिमा के दिन नांदणी में अपने प्रवचन में कहा

की, पूज्य गुरुदेव संत शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज जी के चरणो में मैं कहना चाहता हुं की,पूज्य गुरुदेव संत शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज जी जैनों का अभिमान रहे। संत शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी महाराज दिगंबरत्व की शान रहे। जैनों का अभिमान रहे। श्रमण संघ का स्वाभिमान रहे। जन जन के लिए वो सम्यक्त्व की पेहचान रहे। इस विश्व वसुंधरा पर संतो में सबसे महान रहे। विद्यासागर गुरुवर धरती पर चलते फिरते भगवान रहे। आज हैं धन्य दिवस, जो पाया था संत शिरोमणी आचार्य भगवन श्री विद्यासागर जी गुरुदेव को। शरद पूर्णिमा के दिन जन्मे विद्याधर ने धरा था दिगंबर वेश को। वे इस वसुधा पे आए तो जन जन का कल्याण किए। शुद्ध साधना के साथ जो परम आनंद से जिए। ऐसे त्रिलोक पूज्य गुरुदेव के पावन चरणो में शरदपूर्णिमा के दिन उनके जन्म जयंती पर मैं उनको स्मरण करते हुए उनको नमन करता हुं नमोस्तु गुरुवर !नमोस्तु गुरुवर। **-अभिषेक अशोक पाटील**

पांचवें साल भी बाटेंगे 1 लाख से अधिक गोबर के दीये, विदेशों में भी मनोहर गौशाला में बने गोबर के दीये से जगमग होगी दिवाली

रायपुर (विश्व परिवार)। प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी मनोहर गौशाला की ओर से 1 लाख से अधिक गोबर के दीये बांटे जाएंगे,

इसकी शुरुआत हो चुकी है। कामधेनू गौमाता के गोबर से निर्मित औषधीय युक्त गोबर के वैदिक दीपक भारत सहित विदेशों में भी दिवाली पर जगमगाएंगे। इसके लिए मनोहर गौशाला की ओर से अमेरिका, ब्राजील सहित कई देश में कुरियर के माध्यम से भेजे जा चुके हैं। देश के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री कार्यालय को भी ये दीये भेज दिए गए हैं। मनोहर गौशाला के मैनेजिंग ट्रस्टी अखिल जैन (पदम डाकलिया) ने बताया कि गौशाला में इस वर्ष दिवाली पर नि:शुल्क वितरण के लिए एक लाख से अधिक दीपक का निर्माण किया गया है। पिछले पांच साल में अब तक करीब 5 लाख से अधिक दीये वितरित किए जा चुके हैं। गोबर के दीये लेने दूर -दूर से लोग गौशाला के पंडरी स्थित कार्यालय में पहुंच रहे हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के अवतरण दिवस पर 55 मिनट की वृहद शांतिधारा एवं मुनि श्री निर्वेग सागर जी महाराज का 28वॉ दीक्षा दिवस मनाया गया तथा स्वास्थ्य रक्षक 24 मिनट का भावनायोग का शुभारंभ हुआ

इंदौर (विश्व परिवार)। प्रात:6 बजे मोहताभवन में स्वास्थ लाभ के निमित्त से 24 मिनट का भावनायोग का शुभारंभ मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज के मुखारविंद से किया गया जिसमें हजारों लोगों ने लाभ लिया। धर्म प्रभावना समिति के प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताया उपरोक्त भावनायोग लगातार तीन माह तक प्रतिदिन 6 बजे प्रात: प्रमाणिक ऐप के माध्यम से चलेगा जिसमें मुनि श्री के द्वारा समय समय पर सभी को निर्दशित भी किया जाऐगा। भावनायोग के पश्चात शरदपूर्णिमा के अवसर पर विश्व में सर्वत्र शांती की भावना से वृहद शांतीधारा मुनि श्री के मुखारविंद से की गयी जो कि लगभग 55 मिनट की थी एवं आचार्य गुरुदेव विद्यासागर महामुनिराज की संगीतमय पूजन के साथ गुरुदेव के उपकार को याद किया गया एवं वर्तमान आचार्य समयसागर महाराज को अर्घ समर्पित किया।एवं मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज के 28वें दीक्षा दिवस पर गुरुदेव के उपकारों को याद करते हुये धर्मसभा में मुनि श्री प्रमाण सागर महाराज ने कहा दीक्षा जीवन के रूपांतरण के लिये अंतर्मन की एक घटना है,दीक्षा लेंने का कोई समय निश्चित नहीं होता जब व्यक्ति की समझ जाग जाऐ तभी दीक्षा ले लैना चाहिये मुनि श्री ने कहा संसार के दु:ख देखकर जिनको संसार से अरुचि होती है उनको ही बैराग्य के भाव उत्पन्न होते है,जिसको अभी संसार में रस नजर आ रहा है,उनको दीक्षा के नाम से ही पसीना छूटता है उन्होंने गुरू के प्रति आभार प्रकट करते हुये कहा कि सन 1988 में दीक्षा के पूर्व तीन साल तक में ब्रह्मचारी अबस्था में रहा गुरुदेव की शिक्षा का ही प्रभाव था कि मेरे मन में संसार से कर्म मुक्ति का भाव आया और जिन दीक्षा को ग्रहण करने के भाव हुये उन्होंने कहा कि दीक्षा के संस्कार भले ही गुरु के द्वारा प्रदान किये जाते है, लेकिन उन ब्रतों को निभाना शिष्य को ही पड़ता है। आज बहूत से ऐसे लोग है जो दीक्षा तो ले लेते है लेकिन उस प्रतिष्ठा को जी नहीं पाते, संत कहते है दीक्षा को लैने से ज्यादा महत्वपूर्ण दीक्षा को निभाना है उन्होंने कहा कि हम अपने आपको बहूत सौभाग्यशाली मानते है कि हमें ऐसे सदगुरू मिले जिन्होंने स्वं भी दीक्षा को जिया तथा अपने सभी शिष्यों को सामर्थ्यता प्रदान की, यह मत सोचना की दीक्षा मिल गई तो मोक्ष मिल गया अभी तो यह मोक्ष मार्ग की शुरुआत है, हम सभी उसके यात्री है, लक्ष्य भले ही बहुत दूर हो लेकिन हमें इस बात की संतुष्टि है कि कम से कम हम सही मार्ग पर हैं, मार्ग पर चलने से ही मंजिल मिलती है।इस अवसर पर मुनि श्री निर्वेग सागर महाराज ने कहा कि मैं तो गुरु चरणों की धूल हूं और उन्ही के चरणो में सन् 1997 में सिद्धोदय सिद्धक्षेत्र नेमावर में दस मुनिराजों के साथ तीसरे ऋम पर दीक्षा ली, गुरूजी के आशीर्वाद के साथ समाधिस्थ मुनि प्रशांतसागर महाराज के साथ लगातार 22 वर्ष तक साधना की एवं चम्पापुरी में मुनि श्री की समाधि उपरांत सम्मेदशिखर

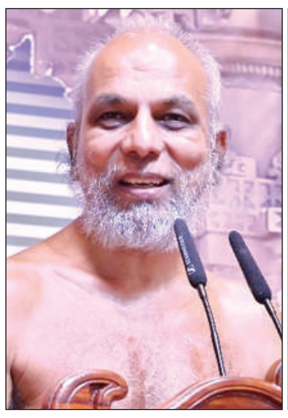

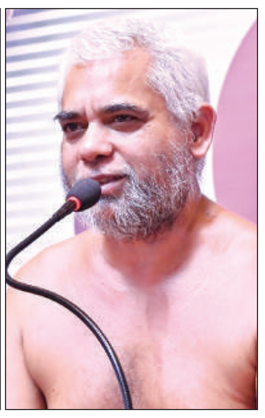

जी में बड़े महाराज का सानिध्य मिला,मुनि श्री ने कहा कि गुरु ने मुझे गुरु समय दिया लघु बनने और बड़े महाराज ने जो वात्सल्य दिया उसी का परिणाम हे कि पिछला चातुर्मास श्री सम्मेद शिखर जी में साथ तथा दूसरा चातुर्मास निर्विकल्प होकर इंदौर में चल रहा है,और आप लोग आज उत्साह और आनंद से दीक्षा दिवस मना रहे है,उन्होंने कहा संयम का मार्ग निर्भयता का मार्ग है,मिथ्यादृष्टि भी यदि संयम को धारण करता है तो वह भी अपना कल्याण कर लेता है।इस अवसर पर मुनि श्री संघान सागर महाराज ने कहा कि आज के दिन श्री मंति की कोख से ऐसा चंद्रमा उदित हुआ था जिन्होंने संसार में अमृत को वरसायाऔर हम सभी पर ऐसी कृपा की।आचार्य श्री का हायकू है दीक्षा ली जाती पद दिया जाता सो यथा इस अवसर पर संघस्थ क्षुल्लक श्री आदर सागर, समादरसागर, चिद्रूपसागर, स्वरूप सागर, तथा सुभग सागर ने दीक्षा दिवस के अवसर पर मुनित्रय की बंदना कर दीक्षा लेंने के भाव प्रकट किये।इस अवसर पर वाहर से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। धर्म प्रभावना समिति के मीडिया प्रभारी राहुल जैन (स्पोर्ट्स) प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी,अध्यक्ष अशोक डोसी,नवीन गोधा आनंद गोधा,महामंत्री हर्ष जैन,मुकेश पाटौदी सहित समस्त पदाधिकारियों बाहर से पधारे अतिथियों का अभिनंदन किया। **-अविनाश जैन**

राज्य स्तरीय अहिंसक आहार पोस्टर प्रतियोगिता, पुरस्कार वितरण एवं बालिका सम्मान समारोह के पोस्टर का विमोचन

धर्म जागृति संस्थान प्रान्त राजस्थान

जयपुर (विश्व परिवार)। धर्म जागृति संस्थान प्रान्त राजस्थान द्वारा आयोजित की गयी राज्य स्तरीय अहिंसक आहार पोस्टर प्रतियोगिता के 20 अक्टूबर रविवार को थडी मार्केट जैन मन्दिर में आयोजित हो रहे पुरस्कार वितरण एवं बालिका सम्मान समारोह के पोस्टर का विमोचन उपाध्याय श्री 108 वृषभा नन्द जी मुनिराज ससंघ के पावन सानिध्य में पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर थड़ी मार्किट जयपुर में किया गया।

प्रांतीय अध्यक्ष पदम् जैन बिलाला के अनुसार कार्यक्रम में प्रथम तीन पुरस्कार के अलावा तैंतीस सांत्वना पुरस्कार भी प्रदान किये जायेंगे। साथ ही पूरे राज्य में नियुक्त 45 संयोजकों को भी उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रशस्ति पत्र प्रदान किए जाएँगे।

महामंत्री सुनील पहाड़िया व कोषाध्यक्ष पंकज लुहाड़िया ने बताया कि कार्यक्रम में मुख्य अतिथि श्रेष्ठी गजेंद्र प्रवीण विकास जैन बडजात्या परिवार कामां वाले होंगे। विशिष्ट अतिथि श्रेष्ठी शान्तिकुमार ममता सोगनी जापान वाले, कांता देवी रश्मि कान्त अलका सोनी परिवार, श्रेष्ठी ऋषभ कुमार कविता सेठी होंगे। कार्यक्रम में आने वाली बालिकाओं का भी विशेष सम्मान किया जाएगा।

पोस्टर विमोचन के समय प्रांतीय अध्यक्ष पदम् जैन बिलाला के साथ थडी मार्केट मंदिर समिति के अध्यक्ष पवन कुमार नगीना वाले, भाग चंद मित्रपुरा, पंकज लुहाड़िया, राजेंद्र ठोलिया सहित थडी मार्केट के कई गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।कार्यक्रम में थडी मार्केट की प्रबंध समिति महिला मंडल व युवा मंच का पूर्ण सहयोग रहेगा।

श्वेतांबर जैन मंदिर में चल रहा धार्मिक आयोजन

नवापारा राजिम (विश्व परिवार)। स्थानीय श्वेताम्बर जैन मंदिर प्रांगण में चल रहे अर्द्ध महापूजन के तृतीय दिवस बुधवार प्रात: 9 बजे परमात्मा शांतिनाथ की प्रतिमा को विधिवत वेदी पर विराजमान किया गया। पू. संघमित्रा श्रीजी मसा की सानिध्यता में विधिकारक दीपक गुरुजी के द्वारा आठ उत्तम द्रव्यों के साथ अभिषेक किया गया। तत्पश्चात 108 अभिषेक सकल श्री संघ सदस्यों के द्वारा संपन्न कराया गया। फिर परमात्मा को सर्वधान्य, फल, एवं विविध नैवेध अर्पण किया गया। सुवर्ण पूजा के अंतर्गत विधिकारक के आव्हान पर उपस्थित श्री संघ श्रावक श्राविकाओं ने अपने स्वर्ण आभूषण समर्पित कर दिए किसी ने स्वर्ण अंगुठी तो किसी ने स्वर्ण मुद्रा का दान किया। तत्पश्चात विधिपूर्वक तम्बोल एवं वस्त्रादि पूजा संपन्न हुई। त्रिदिवसीय अर्ध्द महापूजन का समापन शांति दंडक महाकलश शांतिधारा के साथ हुए। पूज्य साध्वी त्रय एवं विधिकारक द्वारा तीन विशेष शांति स्त्रोत पाठ का वाचन हुआ। इस शांतिधारा हेतु मुख्य पाट पर बैठने का लाभ शेखरचन्द, शशांक, देशना बाफना परिवार ने लिया। शांति कलश के पूर्व परमात्मों की मंगल आरती हुई। तत्पश्चात साध्वी त्रय द्वारा चैत्य वंदन की विधि की गई। महापूजन के मध्य विधि कारक दीपक गुरुजी एवं सहयोगियों का स्वागत श्रीसंघ ने किया। सर्वविघ्न निवारक, सर्व शांतिप्रदायक, श्री संघ उन्नतिकारक अर्द्ध महापूजन का आयोजन पहली बार हुआ। सकल श्री संघ ने आनंद का अनुभव किया। विधि विधान में किसी प्रकार की अविनय अशातना हेतु परमात्मा के समक्ष सभी हाथ जोड़कर माफी मांगी। 17 अक्टूबर को पंचान्हिका महोत्सव के अंतिम दिवस प्रात: 9 बजे मंदीर प्रांगण में दादा गुरुदेव की पूजा धमतरी की बेटियाँ जो नगर के जैन श्री संघ में बंहु बनकर आई उनके सौजन्य से हुआ। **-तुकाराम अंसारी**

जो धर्म सत्ता के अधीन होते हैं, कर्म सत्ता उनके अधीन हो जाती है : विराग जी

दादाबाड़ी की विशेष प्रवचन श्रृंखला में बताए अभ्यंतर तप के 6 भेद

रायपुर (विश्व परिवार)। धर्म सत्ता के अधीन रहेंगे, तो कर्म सत्ता आपके अधीन रहेगी। धर्म नहीं किया तो कर्म अनादिकाल से नाच नचा रही है। आगे भी नचाती रहेगी। आज लोगों को मन का खाना न मिले, तो ये कहते नहीं लगती कि मजा नहीं आया। मतलब खाने में भी चाहिए? वाह! जन्म-जन्मांतर से आपकी आत्मा अगर इस मृत्यु लोक में भटक रही है, तो इसके पीछे रसना (मुंह का स्वाद) ही है। रसना कर्म बंध का बड़ा कारण है। इसे तोडऩा के लिए तपस्या जरूरी है। उपधान तप के अंतर्गत दादाबाड़ी में चल रही विशेष प्रवचन श्रृंखला में गुरुवार को श्री विराग मुनि म.सा. ने ये बातें कही।

कर्म बंध तोडऩे पर अपने विचार रखते हुए मुनिश्री ने कहा, आत्मा की शुद्धि और मोक्ष के लिए जैन धर्म जितनी लचीली परंपराएं कहीं नहीं मिलेंगी। इन्हीं में एक महत्वपूर्ण परंपरा अभ्यंतर तप है। इसमें मुख्यत- 6 प्रकार की तपस्याएं होती हैं, जिनका पालन कर कोई भी जीव अपनी आत्मा को सतगति के रास्ते पर ले जा सकता है। इनके बारे में बताते हुए उन्होंने कहा, पहला है उष्णता तप। यानी अपने भीतर गर्मी सहन करने की क्षमता विकसित करना। यह तपस्वी को अपने शरीर की उच्चत्तम सीमाओं को जानने में मदद करता है। यह न केवल शारीरिक सहनशक्ति बढ़ाता है, बल्कि मानसिक दृढ़ता को भी विकसित करता है। जब हम गर्मी सहन करते हैं, तो हम अपनी इच्छाओं और आराम की चाह को त्यागते हैं। इससे आत्म-नियंत्रण बढ़ता है। कुल मिलाकर यह तप व्यक्ति को उसके भीतर की शक्ति से रूबरू करवाते हुए उसे जीवन की कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार करता है। दूसरा वृत्ति तप है जिसमें व्यक्ति अपनी इंद्रियों और इच्छाओं में संयम रखना सीखता है। यह हमें यह सिखाता है कि भौतिक सुखों के पीछे भागना जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं है। जब हम अपनी इच्छाओं को नियंत्रित करते हैं, तो मन को शांति और स्थिरता की ओर ले जाते हैं। तीसरा संन्यास तप, जिसमें गृहस्थ जीवन त्यागकर आत्मिक साधना की ओर अग्रसर होते हैं। इसका उद्देश्य सांसारिक बंधनों से मुक्ति पाना है। संन्यास लेकर व्यक्ति जीवन के वास्तविक उद्देश्य को समझता है। जीवन में जो लोग गहरी आध्यात्मिकता की खोज में हैं, उनके लिए यह तप विशेष फलदायी है।

सोच की शुद्धता, इच्छाओं से मुक्ति और प्रायश्चित भी जरूरी

अभ्यंतर के अंतर्गत चौथे तप सोच शुद्धि पर उन्होंने कहा, इसमें व्यक्ति ध्यान और मानसिक स्थिरता की ओर अग्रसर होता है। जब हम मन को एक विचार पर केंद्रित करते हैं, तो हम अपनी सोच को शुद्ध करते हैं। आत्मा की गहराइयों में उतरने का प्रयास करते हैं। पांचवा निवृत्ति तप है, जिसमें हम संसार से बांधने वाली इच्छाओं से मुक्ति पाते हैं। यह तप व्यक्ति को सिखाता है कि असली स्वतंत्रता भीतर की इच्छाओं को पहचानकर उनका त्याग करने में है। प्रायश्चित को छठवां तप माना गया है। इसमें व्यक्ति अपनी गलतियां स्वीकार करता है। उन्हें सुधारने की कोशिश करता है। प्रायश्चित का महत्व ये है कि यह आत्मा की शुद्धि करता है और व्यक्ति को अपने कार्यों के प्रति जागरूक बनाता है। यह हमें अपने अतीत को सुधारकर आगे बढऩे का मौका देता है।

उपधान तप के तपस्वियों का एकासना संपन्न

आत्मस्पर्शीय चातुर्मास समिति के अध्यक्ष पारस पारख, महासचिव नरेश बुरड़ और कोषाध्यक्ष अनिल दुग्गड़ ने बताया, दादाबाड़ी में जारी ऐतिहासिक उपधान तप के अंतर्गत 110 से ज्यादा तपस्वी साधु भगवंतों की निश्रा में साधु जीवन बिताते हुए धर्म-ध्यान में लीन हैं। 51 दिनों की उपवास की कड़ी में गुरुवार को एकासना संपन्न हुआ। दादाबाड़ी में इसके लिए लाभार्थी परिवार सोहनलालजी, राकेश कुमार जी, राजेश कुमार बुरड़ की ओर से पर्याप्त इंतजाम किए गए थे। उपधान तप के अंतर्गत विशेष प्रवचन की श्रृंखला जारी है, जिसमें श्री विराग मुनि रोज 8.30 से 10 बजे तक धर्म-ध्यान के बारे में बारीक जानकारी दे रहे हैं।

आचार्य श्री विद्यासागर जी, समय सागर जी महाराज एवं आर्यिका ज्ञानमती माता का मनाया जन्मोत्सव

बहुमण्डल वासुपूज्य जिनालय ने कीर्तिस्तम्भ पर दीप प्रज्वलित कर आचार्य विद्यासागर महाराज को विनयांजलि समर्पित की

तालबेहट/ललितपुर (विश्व परिवार)। शरद पूर्णिमा के पावन अवसर पर सिद्ध क्षेत्र पावागिरि सहित कसबे के दोनों जैन मंदिरों में विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के मध्य गुरु उपकार दिवस मनाया गया। सुबह भारी संख्या में श्रद्धालुओं ने मंदिर पहुँचकर अभिषेक शांतिधारा पूजन विधान में भाग लिया। बहुमण्डल वासुपूज्य जिनालय के तत्वाधान में राष्ट्र संत आचार्य गुरुवर विद्यासागर महाराज, आचार्य समय सागर महाराज एवं आर्यिका गणिनी ज्ञानमती माता जी के जन्मोत्सव पर शान्तिनाथ महामंडल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें अरुणा, रचना, किरण, आभा, अंजना, राजुल, संध्या, अंजू, अलका,

शिखा, आकांक्षा, स्वाति, प्रियंका, पिंकी, जूली, राखी, सोनम, विभा, रोशनी, निधि, सौम्या, प्रिया, शिवानी, सेवी, शोभना आदि का सक्रिय सहयोग रहा। सायं काल की बेला में सभी ने मंगल आरती की शोभायात्रा के साथ पूराकलां तिराहे पर स्थित कीर्तिस्तम्भ पर पहुँचकर दीप प्रज्वलित कर आचार्य विद्यासागर महाराज को विनयांजलि समर्पित की एवं आचार्य समय सागर महाराज एवं आर्यिका गणिनी ज्ञानमती माता जी को नमन किया। लौटकर मंदिर जी में बच्चों से गुरु उपकार दिवस पर सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी। भक्तामर पाठ के साथ 48 दीपक प्रज्वलित कर महाआरती का आयोजन किया गया, जिसमें सकल दिगम्बर जैन समाज का सक्रिय सहयोग रहा। संचालन विशाल जैन पवा एवं आभार व्यक्त पुष्पेंद्र जैन विरधा ने किया।

पहलवान स्व. श्री कन्हैयालाल जी कसार (उस्ताद) जी की 22वीं पुण्यतिथि 18 अक्टूबर को

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर कॉन्वेंट उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों के संस्थापक स्व. श्री कन्हैयालाल जी कसार उस्ताद की 22वीं पुण्यतिथि मनाने आज हम सब उपस्थित हुए हैं। उन्होंने 70 वर्ष की आयु में शुक्रवार दिनांक 18/10/2002 को रात्रि 9:30 मिनट पर अंतिम सांस ली थी। आपका जन्म सत्तीबाजार रायपुर में हुआ था। आपके पिताजी का नाम श्री दयाराम कसार तथा माता जी का नाम श्रीमती मुलिया बाई था। आपके पिता श्री दयाराम कसार जी ख्याति प्राप्त पहलवान थे। उन्हीं का अनुसरण करते हुए पहलवान बन गये और खूब नाम कमाये। आपकी पत्नी का नाम श्रीमती मनोरमा कसार था। आप जब 09 वर्ष के थे तभी उनके पिताजी का देहान्त हो गया। तब बड़े भाई मात्र 11 वर्ष के थे। आप 09 वर्ष की उम्र से ही सत्तीबाजार व्यायाम षाला जाने लगे थे। आज से 98 वर्ष पूर्व जब छुआछुत का काफी बोल-बाला था उस समय भी सभी जाति, धर्म के लोगों को कुश्ती सिखाते थे। घर में जब वे जाते उनकी माता जी उन्हे बाहर से स्नान कर घर में कदम रखने को कहती थी। छुआछुत की परवाह किये बिना सबको गले लगाया। 80 वर्ष पूर्व रायपुर शहर में 07 व्यायाम शाला थे जैसे बढ़ईपारा व्यायाम शाला, बंजारी चौक व्यायाम शाला, जैतुसाव मठ व्यायाम शाला, दन्तेश्वरी व्यायाम शाला, शुक्रवारी बाजार व्यायाम शाला, जोरापारा व्यायाम शाला, नयापारा व्यायाम शाला, आपके सभी अखाड़े के उस्तादों से काफी मित्रवत् व्यवहार रहा। आपके गुरू स्व. श्री आलोपी पहलवान जी थे। जो कानपुर के जाने-माने कुष्ती के उस्ताद थे। कुश्ती के प्रति रूझान को देखकर श्री आलोपी पहलवान ने स्व. श्री कन्हैयालाल जी कसार को कुश्ती के अनेकों दांव-पेंच सिखाये। प्रतिदिन आप 5 से 6 घण्टे तक व्यायाम करते थे। वे अधिकतर 3000 बैठक एवं 3000 दण्ड मारा करते थे। उन्हें कुश्ती में अच्छी ख्याति प्राप्त थी। 60 वर्षों तक सत्तीबाजार व्यायाम शाला में वे कुश्ती सिखाते रहे। उन्होंने सत्तीबाजार व्यायाम शाला का नाम मध्यप्रदेश, उड़ीसा, महाराष्ट्र, उत्तरप्रदेश में ऊँचा किया। इस शहर में जो पूराने व्यक्ति हैं जिन्हें व्यायाम के प्रति रूझान था सत्तीबाजार व्यायाम शाला आकर स्व.कन्हैयालाल जी कसार से कुश्ती सिखाते थे। इसके लिए उन्होने किसी भी प्रकार का चंदा नहीं लिया। वे अपना घर परिवार का कार्य छोड़कर कुश्ती सिखाते थे। उन्हें किसी भी प्रकार का कोई घमण्ड नहीं था, जहां भी शहर में दंगल कुश्ती होती तो आप, अपने शिष्यों को ले जाते और निर्णायक का कार्य करते थे। देशबंधु संघ में भी कुश्ती प्रतियोगिता में निर्णायक का कार्य करते थे। उस समय स्व. ठाकुर प्यारेलाल जी बुनकर सोसायटी के निर्माता थे। के पुत्र स्व. श्री हरि ठाकुर जी लेखक एवं फिल्म निर्माता थे ये

स्व. कन्हैलाल कसार जी से अधिकतर मिला करते थे। एवं पूर्व मुख्यमंत्री स्व. श्री श्यामाचरण जी शुक्ला, पूर्व केन्द्रीय प्रसारण मंत्री नई दिल्ली स्व. श्री विद्याचरण जी शुक्ल, स्व. श्री शारदाचरण तिवारी जी, स्व. श्री तरूण प्रसाद चटर्जी विधायक रायपुर, श्री रमेश बैस जी, सांसद एवं वर्तमान में राज्यपाल के पद पर आसीन है। ये सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति सत्तीबाजार के रास्ते से जाते समय उस्तादजी से मिलकर जाते थे। श्री बृजमोहन अग्रवाल विधायक एवं मंत्री, श्री राजेश मूणत जी मंत्री, श्री प्रफुल्ल विश्वकर्मा जी उस्ताद जी का सम्मान करते थे, पूर्व महापौर सुनील सोनी तथा वर्तमान सांसद रायपुर, पूर्व महापौर प्रमोद दुबे जी, सत्तीबाजार व्यायाम शाला आते रहते थे। उनके शिष्य आज भी कुश्ती के लिए जाने जाते हैं। बंजारी चौक, आमापारा, ब्राह्मणपारा, सदर बाजार, कंकालीपारा, भोईपारा, बूढ़ापारा, पुरानी बस्ती, नयापारा, तात्यापारा कुश्ती के शौकीन सभी सत्तीबाजार व्यायम शाला आकर स्व. कन्हैयालाल जी कसार से कुश्ती सीखा करते थे। श्याम कसार, अजय साहू, जीन पहलवान, माया भारती, सरताज अली, गंगादीन यादव, दीप पहलवान ये सभी कन्हैयालाल जी उस्ताद के शिष्य थे जिन्होने कुश्ती के क्षेत्र में ख्याति प्राप्त की थी। आपके मन में विद्यालय के प्रति रूझान बढ़ा और सबसे पहले 45 वर्ष पर्व सत्तीबाजार में विद्यालय की नीव रखी। उसके पश्चात् अश्वनी नगर, गुढ़ियारी और खमतराई में विद्यालय की स्थापना की। आपका उद्देश्य इस शहर के छात्र-छात्राओं को न्यूनतम शुल्क में सर्वांगीण विकास करना रहा है। आज भी न्यूनतम शुल्क में छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास उनके पुत्रों का उद्देश्य रहा है। विद्यालय के छात्र-छात्राओं से अच्छा व्यवहार होने के कारण उन्हें बाबूजी से सम्बोधित किया करते थे। जिन परिवार की आर्थिक स्थिति खराब रहती थी, उन परिवारो में कन्या की शादी में बर्तन एवं नगद राशि दिया करते थे। अपने जीवन काल में करीब 1200 कन्याओं की विवाह में सहयोग प्रदान किया। विद्यालय के छात्र - छात्रओं से अनुरोध है कि आप सभी बड़े होकर अच्छे आदर्शो पर चले। सभी लोगों से अच्छा व्यवहार करना सीखे, जितना हो सके समाज के विकास के लिए कार्य करें। जिससे आपके माता-पिता का नाम ऊंचा हो सके। आपके अच्छे कार्यों से आपका नाम शहर, देश एवं विदेशों तक रौशन हो सके। 14 नवंबर 1992 विश्व हिन्दु परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोक सिघंल जी के नेतृत्व में राम जन्मभूमि आंदोलन में स्व. रामाराव जी नायडू, श्री शांताराम जी सराफ, स्व. पढ़रीराव कृदत्त, श्री कुंतल जी चौहान के साथ, बजरंग व्यायाम शाला के उस्ताद स्व.कन्हैयालाल जी कसार द्वारा तन-मन-धन के साथ राम जन्म भूमि अयोध्या के लिए कूच किया गया।

संक्षिप्त समाचार

ट्रक से भिड़ी जवानों से भरी बस,15 घायल

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले के एनएच-30 में पुलिस जवानों से भरी बस और ट्रक में जोरदार भिड़ंत हो गई है। इस हादसे में 15 जवान घायल हो गये है जिनमें दो महिला पुलिसकर्मी भी शामिल है। वहीं दो जवानों की हालत गंभीर बताई जा रही है। सभी घायलों का इलाज धमतरी जिला अस्पताल में चल रहा है। घटना अर्जुनी थाना क्षेत्र के संबलपुर की यह घटना बताई जा रही है। मिली जानकारी के अनुसार बुधवार को 20 जवान को लेकर एक बस रायपुर से सुकमा जा रहे थे। इस दौरान अर्जुनी थाना क्षेत्र के संबलपुर के पास नेशनल हाईवे में सामने से आ रही ट्रक से बस की भिड़ंत हो गई। बताया जाता है कि बस चालक ने अपने सामने जा रही एक ट्रक को ओव्हरटेक किया जिसके चलते सामने से आ रही दूसरी ट्रक से जोरदार भिड़ंत हो गई। हादसे में 15 जवान घायल हो गये है जिनमें से दो की हालत गंभीर बताई जा रही है। घटना की सूचना के बाद मौके पर तत्काल सुकमा पुलिस पहुंची और घायलों को उपचार को लिए धमतरी के जिला अस्पताल भिजवाया।

उल्टी-दस्त से अब तक सात ग्रामीणों की मौत

सुकमा(विश्व परिवार)। जिले में ग्रामीणों की मौतों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। कोंटा विकासखंड के इतकल और उसकेवाया के बाद अब ओड़िशा सीमा के निकट, छिंदगढ़ विकासखंड के चितलनार गांव में पिछले 10 दिनों में जनजातीय समुदाय के सात ग्रामीणों की मौत उल्टी और दस्त के कारण हो चुकी है। मृतकों में पति दूधी मासा, जिरमिट्टी पति लछिन्दर, सुकलु, दशमी पति सुरेंद्र, सुकड़ी पति सुकलु, सुकड़ी पति बिट्ठल, और सेतुराम शामिल हैं। इस गांव में हर 12 घंटे में एक ग्रामीण की मौत हो रही है, और कई लोग अभी भी अस्पताल में उपचार के लिए भर्ती हैं। गांव के निवासी घेनवाराम ने बताया कि सेतुराम को कल रात लगभग आठ बजे से उल्टी-दस्त की समस्या शुरू हुई थी। उन्होंने रात में कुछ दवाइयां लीं, लेकिन सुबह उनकी हालत बिगड़ गई, जिसके परिणामस्वरूप उनकी मौत हो गई। सरपंच के पति हिड़मा ने जानकारी दी कि हाल ही में गांव में आई बाढ़ के बाद डायरिया फैल गया है, जिससे ग्रामीणों की जानें जा रही हैं। लगातार हो रही मौतों ने गांव के लोगों में दहशत पैदा कर दी है।

अपार्टमेंट में घुसा भालू, लिफ्ट खोलने की भी कोशिश की

कांकेर(विश्व परिवार)। कांकेर शहर में भालुओं का आतंक थमने का नाम नहीं ले रहा है, जिससे स्थानीय निवासियों में दहशत का माहौल है. हाल ही में दो भालू कांकेर के एक व्यापारी के घर की पार्किंग में नजर आए. यह घटना पार्किंग एरिया में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है. जिसका वीडियो सोशल मीडिया में काफी वायरल हो रहा है. यह मामला कांकेर वन परिक्षेत्र का है. वीडियो में देखा जा सकता है पार्किंग एरिया में दो भालू घूमते हुए दिख रहे हैं और लिफ्ट में भी घुसने की कोशिश करते हैं. इसी बीच एक युवक स्कूटी से पार्किंग की ओर आता है और मोबाइल पर बात करता रहता है. भालू भी वहीं घूमते रहते हैं, वीडियो में देख ऐसा लग रहा है की भालू युवक को देख लुका छुपी खेल रहे हो. हालांकि युवक को पास में भालू के मौजूद होने की भनक नहीं लगती है. तभी दूसरा युवक स्कूटी से आता है और वह जैसे ही भालू को देखा है तो वहीं गाड़ी छोड़कर तेजी भाग जाता है और उसे देखकर वहां मौजूद दूसरा युवक भी जान बचाकर भागता है. रोजाना भालुओं के आमद से शहरवासी परेशान है. भालू भोजन-पानी की तलाश में रोजाना आबादी वाले इलाके में पहुंचते हैं. इस तरह की घटना से वन विभाग की ओर से सुरक्षा के तमाम दावे खोखले साबित हो रहे हैं.

कुरूद पुलिस ने अवैध शराब बेचने वाले आरोपी को किया गिरफ्तार

धमतरी(विश्व परिवार)। जिले की कुरूद पुलिस ने अवैध शराब बेचने वाले एक आरोपी को गिरफ्तार कर उसके पास से 24 पौवा देशी मशाला शराब कीमती 2640/-रुपये,बिक्री रकम 490/-रुपये,जुमला 3130 रूपये जप्त किया है। मामले में आरोपी के विरूद्ध धारा 34 (1)(ख)आब0एक्ट के तहत कार्यवाही की गई है। मिली जानकारी के अनुसार धमतरी पुलिस थाना कुरूद को मुखबिर के सूचना मिली की एक व्यक्ति द्वारा मंदरौद आनंद राईस मिल के सामने बंद कांप्लेक्स में अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री कर रहा हैं कि सूचना के आधार पर शराब रेड कार्यवाही कर आरोपी कुलेश्वर बघेल पिता करण बघेल उम्र 19 वर्ष, ग्राम मंदरौद के कब्जे से एक सफेद रंग के पानी पाउच के प्लास्टिक बोरी के अंदर 24 पौवा देशी मशाला शराब कीमती 2640/- रूपये एवं बिक्री रकम 490/- रूपये जुमला कीमती 3130/- रूपये को जप्त कर आरोपी के विरूद्ध अप0 क्र0 420/24 धारा 34 (1)(ख) आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही किया गया है।

सुदूरवर्ती क्षेत्र के ग्राम महला में पहली बार लगा जनसमस्या निवारण शिविर

शिविर लगाकर दी गई शासन की योजनाओं की जानकारी, प्राप्त 309 आवेदनों में से 147 का मौके पर निराकरण

कांकेर(विश्व परिवार)। आमजनता तक शासन-प्रशासन की योजनाओं की पहुंच सुनिश्चित करने प्रदेश सरकार के निर्देशानुसार जिला प्रशासन द्वारा दूरस्थ क्षेत्रों में जनसमस्या निवारण शिविर आयोजित किए जा रहे हैं, जिससे ग्रामीण हितग्राहीमूलक योजनाओं का लाभ ले सकें। इसी क्रम में कलेक्टर श्री नीलेश कुमार महादेव क्षीरसागर के निर्देश पर जिले के सुदूरवर्ती कोयलीबेड़ा विकासखंड की ग्राम पंचायत परतापुर के आश्रित ग्राम महला में जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर लगाया गया। शिविर में ग्रामीणों की ओर से विभिन्न मांगों और समस्याओं के समाधान हेतु कुल 309 आवेदन प्राप्त हुए। जिनमें से 147 का निराकरण शिविर स्थल में ही किया गया। जनसमस्या निवारण शिविर में पहुंचे कलेक्टर श्री नीलेश महादेव क्षीरसागर ने ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि सुदूर वनांचल क्षेत्र के ग्रामीण अब विकास की मूल धारा से जुड़कर अपने जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं और आने वाले दिनों में वे अपने अधिकार से वंचित नहीं रहेंगे। उन्होंने आश्वस्त किया कि ग्राम महला, परतापुर इलाके के विकास हेतु जो भी संभव है, जिला प्रशासन पूरी इच्छाशक्ति के साथ पूरा करेगा। इस दौरान उन्होंने ग्राम महला में सामुदायिक भवन निर्माण की घोषणा भी की। साथ ही दीपावली पर्व से पहले प्रत्येक घर में स्वच्छ पेयजल की उपलब्धता सुनिश्चित करने की बात कही। कलेक्टर ने यह भी बताया कि परतापुर क्लस्टर में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत 200 से अधिक स्वीकृत प्रकरण हेतु पहली किश्त की राशि जारी कर दी गई है। इसके अलावा अन्य मांगों पर भी सार्थक निराकरण करने का आश्वासन कलेक्टर ने शिविर स्थल में ग्रामीणों को दिया। इसके पहले, जिला पंचायत के सीईओ श्री सुमित अग्रवाल ने ग्रामीणों से शिविर के माध्यम से विभिन्न विभागों में संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ लेने की अपील की। उन्होंने शासन की योजनाओं का लाभ लेने के लिए बैंक खाते खुलवाने, आधार अद्यतन कराने और अन्य प्रकार के आवश्यक दस्तावेज बनवाने की समझाइश ग्रामीणों को दी। इस दौरान ग्राम पंचायत परतापुर के सरपंच श्री राजाराम कोमरा ने स्थानीय मांगों और समस्याओं से कलेक्टर श्री क्षीरसागर को अवगत कराया। इसके पहले, कलेक्टर ने पखांजूर के हायर सेकेंडरी स्कूल में स्व. विक्रम सिंह बेसरा स्मृति में आयोजित सम्मान समारोह में शामिल होकर निबंध प्रतियोगिता में विजेता रहे छात्र छात्राओं को सम्मानित किया। जिले के दूरस्थ अंचल में स्थित ग्राम महला में आयोजित जिला स्तरीय जनसमस्या निवारण शिविर में काफी संख्या में ग्रामीणों ने मौके पर पहुंचकर अपनी मांगों से जिला प्रशासन को अवगत कराया। इस दौरान स्वास्थ्य विभाग के स्टाल में 121 ग्रामीणों का आयुष्मान स्वास्थ्य कार्ड के लिए त्वरित पंजीयन किया गया। इसी तरह शिविर में मुख्यत: पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग को 145, खाद्य विभाग को 36, वन विभाग को 23 आवेदन प्राप्त हुए। इस दौरान कलेक्टर ने 04 हितग्राहियों को मौके पर किसान किताब वितरित की, साथ ही 03 हितग्राहियों को राष्ट्रीय वृद्धावस्था पेंशन का स्वीकृति पत्र सौंपा।

कलेक्टर ने दल्लीराजहरा के कोंडे पावर हाउस में 100 बिस्तर अस्पताल का किया निरीक्षण

अस्पताल में सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने के अलावा बीएसपी के अधिकारियों को अस्पताल तक सड़क तथा जरूरी निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा कराने के दिए निर्देश

बालोद(विश्व परिवार)। कलेक्टर इन्द्रजीत सिंह चन्द्रवाल ने आज इस्पात नगरी दल्लीराजहरा के कोंडे पावर हाउस वार्ड नंबर 15 में संचालित 100 बिस्तर अस्पताल का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। इस दौरान उन्होंने अस्पताल के विभिन्न वार्डों एवं कक्षों में पहुँचकर अस्पताल में मरीजों के लिए उपलब्ध सुविधाओं एवं अस्पताल की व्यवस्था का मुआयना किया। उन्होंने मौके पर उपस्थित अस्पताल अधीक्षक डॉ. पीएल मेरिया से अस्पताल में पदस्थ कुल डॉक्टर, नर्स एवं अन्य स्टाफ के संख्या के संबंध में जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने बीएसपी के अधिकारियों को अस्पताल के समीप कोंडे पावर हाउस में प्रस्तावित सड़क निर्माण कार्य को अस्पताल तक वृद्धि करने के निर्देश दिए। जिससे कि अस्पताल में आने वाले मरीजों एवं आम लोगों के लिए सुगम यातायात की व्यवस्था सुनिश्चित हो सके। इस दौरान कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने अस्पताल के विभिन्न वार्डों, लैब, ऑपरेशन थियेटर, लेबर रूम आदि का निरीक्षण किया। उन्होंने बीएसपी के अधिकारियों को अस्पताल में अधोसंरचना से जुड़े कार्यों को शीघ्र पूरा करने के निर्देश भी दिए। इस दौरान कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने अस्पताल प्रबंधन की मांग पर लेबर रूम से लगे ऑपरेशन थियेटर को सेपरेट करने तथा वहाँ की व्यवस्था को बेहतर बनाने के लिए आवश्यक निर्माण कार्य करने के लिए अनुविभागीय अधिकारी लोक निर्माण विभाग को निर्देशित किया। कलेक्टर श्री चन्द्रवाल ने अस्पताल अधीक्षक से अस्पताल में भर्ती होने वाले मरीजों की संख्या एवं उनके लिए उलपब्ध सुविधाओं के संबंध में जानकारी ली। श्री चन्द्रवाल कोंडे पावर हाउस के 100 बिस्तर वाले अस्पताल के व्यवस्था को बेहतर बनाने के संबंध में बीएसपी अस्पताल में राजस्व एवं स्वास्थ्य विभाग तथा बीएसपी प्रबंधन अधिकारियों को तलब कर आवश्यक चर्चा की। उन्होंने राजस्व विभाग एवं बीएसपी प्रबंधन के अधिकारियों को आपसी समन्वय से 100 बिस्तर वाले अस्पताल तक सड़क निर्माण तथा अन्य जरूरी निर्माण कार्यों को शीघ्र पूरा करने के निर्देश दिए। इस दौरान नगर पालिका अध्यक्ष श्री शिबू नायर, एसडीएम श्री राम कुमार सोनकर एवं बीएसपी प्रबंधन तथा अन्य विभागों के अधिकारीगण उपस्थित थे।

पुलिस मेचका धमतरी ने साइबर अपराध के खिलाफ चलाया सायबर जागरूकता अभियान

तुमड़ीबहार हाई स्कूल के छात्र-छात्राएं एवं शिक्षकगण को साइबर सुरक्षा,एवं नशा मुक्ति के संबंध में किया गया जागरूक

धमतरी(विश्व परिवार)। पुलिस,थाना मेचका द्वारा साइबर जन जागरूकता पखवाड़ा के तहत सुदुर वनांचल के हाई स्कुल तुमड़ी बहार के स्कूल के छात्र-छात्राओं को साइबर सुरक्षा एवं नशा मुक्ति के संबंध में जागरूक किया गया। जागरूकता कार्यक्रम में थाना प्रभारी मेचका ने हाई स्कुल तुमड़ी बहार के छात्र-छात्राओं एवं शिक्षकगण को साइबर धोखाधड़ी के विभिन्न तरीकों को सरल भाषा में समझाया और बताया कि कैसे अनजान कॉल्स पर अपनी व्यक्तिगत जानकारी जैसे ओटीपी या बैंकिंग विवरण साझा करने से बचना चाहिए। उन्होंने सभी छात्र छात्राओं से अपील किये की वे धमतरी पुलिस द्वारा चलाए जा रहे साइबर जन जागरूकता पखवाड़ा और सायबर जागरूकता अभियान से जुडें और मैसेज को विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुप्स के माध्यम से जागरूकता संदेशों को अधिक से अधिक शेयर करें, ताकि समाज के हर व्यक्ति तक साइबर सुरक्षका संदेश पहुंच सके। थाना प्रभारी मेचका ऑनलाइन खरीदारी करते समय सावधानी बरतने की भी सलाह दी। उन्होंने तह भी बताया की साइबर अपराधों से बचने का सबसे सशक्त उपाय सायबर फ्रॉड के संबंध में जानकारी एवं जागरूकता ही है, जो एक जागरूक नागरिक को कभी भी साइबर अपराधियों के जाल में नहीं फसा पायेगा। उक्त कार्यक्रम के दौरान साइबर जागरूकता पाम्पलेट्स का वितरण किया गया। सभी छात्र छात्राएं ने साइबर सुरक्षा के प्रति जागरूक रहने और दूसरों को भी जागरूक करने का संकल्प लिया।

मुरिया दरबार को भाजपा ने मजाक बना दिया-पूर्व विधायक रेखचंद जैन

जगदलपुर(विश्व परिवार)। पूर्व विधायक व संसदीय सचिव रेखचंद जैन ने कहा है कि मुरिया दरबार रियासत काल की प्रभावी व उल्लेखनीय व्यवस्था थी। इसमें स्थानीय ग्रामीणों की बात तथा शिकवा- शिकायतों को सुनकर शासन एवं प्रशासन के द्वारा जो नजीर पेश की जाती थी, वह समूचे राज्य में लागू होती थी लेकिन भाजपा की छत्तीसगढ़ सरकार ने इस महत्वपूर्ण प्रथा को महज रस्म अदायगी तक सीमित कर बस्तर के लाखों ग्रामीणों व बस्तर दशहरा पर्व में आस्था रखने वाले श्रद्धालुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने का कार्य किया है। मंगलवार को यहां आयोजित मुरिया दरबार में अभिव्यक्ति देने मांझी-मुखिया, चालकी आदि बैठे रहे। जन समस्याओं को जानने का प्रयास नहीं किया गया। इससे इनके गांव, घर व क्षेत्र की परेशानी जस की तस बनी रहेगी। मुख्यमंत्री आए और अपना भाषण देकर चले गए। मुरिया दरबार में बस्तर के सभी जन प्रतिनिधियों को आमंत्रित करने की परंपरा रही है। तुच्छ राजनीति के कारण भाजपा ने इसे भी खंडित किया है। बस्तर के किसी भी कांग्रेस के विधायक - सांसद को बुलाया नहीं गया था। यह जनादेश का अपमान है। पूर्व विधायक के अनुसार बस्तर दशहरा पर्व सभी समाजों व उसके प्रतिनिधियों के समन्वय का प्रतीक रहा है। रियासत काल से आज तक इसमें सर्व समाजों की भागीदारी रही है लेकिन भेदभाव के वशीभूत होकर भाजपा ने अपने अहंकार में इसे भी खंडित किया है। श्री जैन ने मीडिया को जारी बयान में कहा है कि दंतेश्वरी मंदिर के पुजारी को प्रति माह केवल तीन हजार रुपये ही मिल रहे हैं।

लगातार बढ़ते जल संकट को देखते हुए किसान धान के बदले कम पानी उपयोग वाली फसल लें - कलेक्टर संजय संजय

कलेक्टर की अध्यक्षता में जिला जल उपयोगिता समिति की बैठक संपन्न

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। कलेक्टर संजय अग्रवाल की अध्यक्षता में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में जिला जल उपयोगिता समिति की बैठक आयोजित की गई। इस अवसर पर खुज्जी विधायक श्री भोलाराम साहू, डोंगरगढ़ विधायक श्रीमती हर्षिता बघेल, जिला पंचायत सीईओ सुश्री सुरूचि सिंह उपस्थित थी। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि जल संकट की स्थिति को देखते हुए आने वाली पीढ़ी के लिए पानी को बचाना आवश्यक है। बैठक में लगातार बढ़ते हुए जल संकट को देखते हुए रबी मौसम में कम पानी उपयोग वाली फसल लेने का निर्णय लिया गया। जिससे पेयजल संकट और आने वाली पीढ़ी के लिए पानी बचाया जा सके। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने कहा कि फसल चक्र परिवर्तन अपनाते हुए किसानों को धान के बदले कम पानी उपयोग वाली फसलों की खेती करनी चाहिए। इससे किसानों की भूमि की उर्वरता क्षमता के साथ आय में वृद्धि होगी। उन्होंने बताया कि पिछले रबी मौसम में धान की फसल के लिए 42 हजार सिंचाई पंप के उपयोग से सबसे ज्यादा पानी का दोहन हुआ है। जिसके कारण भू-जल स्तर नीचे चला गया था और पेयजल संकट की स्थिति बन गई थी। उन्होंने किसानों से रबी में धान के स्थान पर कम पानी उपयोग वाली अन्य फसल लेने कहा। इसके लिए किसानों को प्रेरित करने कहा और गांव-गांव में मुनादी कराने के निर्देश अधिकारियों को दिए। कलेक्टर ने कहा कि किसानों को समूह में खेती करने के लिए प्रोत्साहित करें। जिससे उनकी आय में वृद्धि होगी। उन्होंने अधिकारियों को सभी बैराज, एनीकट, जलाशयों एवं अन्य अधोसंरचना का सर्वे कराकर मरम्मत योग्य कार्यों को शीघ्र मरम्मत कराने के निर्देश दिए। कलेक्टर श्री अग्रवाल ने जिस कार्य के लिए राशि आबंटित है, उस कार्य को कराने के बाद समय पर मजदूरी भुगतान अवश्य करने के निर्देश अधिकारियों को दिए। सीईओ जिला पंचायत सुश्री सुरूचि सिंह ने कहा कि सभी गांवों में कृषि सखी है।

जनकल्याणकारी योजनाओं का धरातल पर करें कारगर क्रियान्वयन : डोमन सिंह

कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह ने संभाग स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कमिश्नर बस्तर संभाग डोमन सिंह ने कहा कि शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं का धरातल पर कारगर क्रियान्वयन करें। संभाग स्तरीय अधिकारी अपने अधीनस्थ जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों के कार्यों की नियमित तौर पर समीक्षा करें और प्रभावी तरीके से योजनाओं को जनसाधारण तक पहुंचाने की दिशा में सकारात्मक प्रयास करें। कमिश्नर बस्तर संभाग डोमन सिंह ने बुधवार को कमिश्नर कार्यालय के सभागार में आयोजित संभाग स्तरीय अधिकारियों की समीक्षा बैठक में उक्त निर्देश दिए। कमिश्नर ने बैठक में कहा कि जिला और ब्लॉक स्तर के अधिकारियों की बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से करें, ताकि समय की बचत हो तथा फील्ड में उन्हें काम करने का ज्यादा अवसर मिल सके। वहीं क्षेत्र भ्रमण के दौरान योजनाओं के क्रियान्वयन का निरीक्षण कर सतत मॉनिटरिंग करें और मैदानी अधिकारियों-कर्मचारियों को आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान करें। मैदानी स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने अधिकारियों-कर्मचारियों का उत्साहवर्धन भी करें, जिससे अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों को प्रोत्साहन मिल सके। उन्होंने अधिकारियों को स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत अपने विभागीय कार्यालय सहित अधीनस्थ कार्यालय एवं परिसरों में स्वच्छता एवं साफ-सफाई अभियान चलाए जाने कहा। वहीं इसे नियमित तौर पर हर महीने के तीसरे शनिवार को सुनिश्चित किए जाने हेतु बल देते कहा कि स्वच्छता हमारी व्यवहार में शामिल हो, इस हेतु कार्यालय परिसर की साफ-सफाई के साथ ही दफ्तर को भी व्यवस्थित रखने का सार्थक पहल करें। कमिश्नर बस्तर डोमन सिंह ने बैठक के दौरान अधिकारियों को निर्देशित किया कि नियद नेल्लानार योजनांतर्गत क्षेत्रों में शासन की चयनित सभी योजनाओं का सेचुरेशन मोड पर क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जाए। जिसके तहत प्रत्येक योजनाओं से पात्र हरेक व्यक्ति को लाभान्वित किया जाए। उन्होंने इस दिशा में सभी विभागों के अधिकारियों को समन्वित रूप से दायित्व निर्वहन किए जाने के निर्देश दिए। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग की आयुष्मान कार्ड पंजीयन, आयुष्मान आरोग्य मंदिर संचालन तथा स्वास्थ्य शिविर आयोजन, प्रधानमंत्री जन औषधि केन्द्र खोलने, सिकलसेल स्क्रीनिंग, चिरायु योजना, पोषण पुनर्वास केन्द्र, प्रधानमंत्री राष्ट्रीय डायलिसिस कार्यक्रम, राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मूलन कार्यक्रम, राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम की समीक्षा करते हुए आयुष्मान कार्ड पंजीयन हेतु टीकाकरण दिवस के बाद शिविर लगाए जाने सहित शत-प्रतिशत संतृप्त किये जाने कहा। साथ ही उक्त शिविर के पूर्व मुनादी के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार करने के निर्देश भी दिए, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोगों को जानकारी हो सके। कमिश्नर ने पोषण पुनर्वास केन्द्र में कुपोषित बच्चों को भर्ती कर उपचार करने के लिए रोस्टर तैयार कर बेड खाली होने के साथ ही प्रतीक्षा सूची के आधार पर अन्य बच्चों को लाभान्वित किए जाने कहा।

व्यापार समाचार

भारत ने अक्षय ऊर्जा उत्पादन में 200 गीगावाट का आंकड़ा किया पार

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत ने सितंबर महीने में रिन्यूएबल एनर्जी उत्पादन में 200 गीगावाट का आंकड़ा पार कर लिया है। केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण (सेंट्रल इलेक्ट्रिसिटी अथॉरिटी) के नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, रिन्यूएबल एनर्जी आधारित बिजली उत्पादन क्षमता ने सितंबर में 200 गीगावाट का आंकड़ा पार कर लिया। आंकड़ों के अनुसार, कुल रिन्यूएबल एनर्जी उत्पादन 201,457.91 मेगावाट तक पहुंच गया, जिसमें 90,762 मेगावाट सौर ऊर्जा और 47,363 मेगावाट पवन ऊर्जा उत्पादन शामिल है। देश की कुल गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली क्षमता अब कुल बिजली उत्पादन क्षमता का 46.3 प्रतिशत है। आंकड़ों के अनुसार, बिजली उत्पादन के मामले में राजस्थान 31.5 गीगावाट बिजली के साथ पहले स्थान पर है। इसके बाद 28.3 गीगावाट बिजली उत्पादन कर गुजरात दूसरे नंबर पर और 23.7 गीगावाट के साथ तमिलनाडु तीसरे स्थान पर है। लिस्ट में कर्नाटक का नाम 22.3 गीगावाट बिजली उत्पादन के साथ चौथे स्थान पर आता है। सरकार के अनुसार, देश में 2014 से नवीकरणीय ऊर्जा के माध्यम से बिजली उत्पादन में 86 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जो 193.5 बिलियन यूनिट से बढ़कर 360 बिलियन यूनिट हो गई। केंद्रीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने पिछले सप्ताह कहा था कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने 2014 से अपनी नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता में परिवर्तनकारी वृद्धि देखी है, जो 75 गीगावाट से 175 प्रतिशत बढ़कर आज 200 गीगावाट से अधिक हो गई है। भारत हरित नौवहन क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण प्रगति कर रहा है। देश का लक्ष्य 2030 तक शीर्ष 10 जहाज निर्माण देशों में तथा 2047 तक शीर्ष 5 देशों में शामिल होना है। अंतरराष्ट्रीय अक्षय ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए) के अनुसार, भारत में 2023 में कुल स्थापित पवन ऊर्जा क्षमता 44.7 गीगावाट थी, जो विश्व स्तर पर चौथे स्थान पर है। भारत ने 2023 में 2.8 गीगावाट पवन ऊर्जा क्षमता बढ़ाई, पांच साल तक इसकी गति धीमी रही लेकिन अब इसने रफ्तार पकड़ ली है।

भारत की जेन जेड आबादी 2035 तक 1.8 ट्रिलियन डॉलर करेगी खर्च

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारत को एक युवा राष्ट्र माना जाता है। देश की 377 मिलियन आबादी जनरेशन जेड से आती है। जनरेशन जेड देश की कंजप्शन ग्रोथ को लेकर एक बड़े योगदानकर्ता होंगे। बुधवार को आई एक रिपोर्ट के अनुसार, जेन जेड 2025 तक 1.8 ट्रिलियन डॉलर का प्रत्यक्ष खर्च लाने में सक्षम होंगे। बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप (बीसीजी) के साथ साझेदारी में स्नैप इंक की रिपोर्ट के अनुसार, 2025 में, जनरेशन जेड का प्रत्यक्ष खर्च 250 बिलियन डॉलर तक पहुंच जाएगा। इस समय तक हर दूसरा जनरेशन जेड कमाई कर रहा होगा। जेन जेड की सामूहिक व्यय क्षमता 860 बिलियन डॉलर तक पहुंच गई है, जो 2035 तक 2 ट्रिलियन डॉलर तक बढ़ जाएगी। जनरेशन जेड, मिलेनियल्स के बराबर ही खरीदारी करता है। वे अपने खर्च पर 1.5 गुना ज्यादा रिसर्च करते हैं। स्नैप इंक के भारत में प्रबंध निदेशक पुलकित त्रिवेदी ने कहा, भारत एक युवा राष्ट्र है, जिसकी 377 मिलियन जनरेशन जेड आबादी है, जो अगले दो दशकों में भारत के विकास के भविष्य को आकार देगी। जेन जेड को सेवा देने वाले प्लेटफॉर्म के रूप में हम ब्रांड और बिजनेस के साथ काम करने को तैयार हैं। लगभग 45 प्रतिशत व्यवसाय जनरेशन जेड की क्षमता को पहचानते हैं, लेकिन केवल 15 प्रतिशत ही सक्रिय रूप से उन्हें संबोधित करने के लिए कार्रवाई करते हैं, जो एक बड़े अवसर का संकेत देता है। स्नैपचैट के डेली एक्टिव यूजर्स में 90 प्रतिशत की आयु 13-34 वर्ष है, जिससे पता चलता है कि यह प्लेटफॉर्म भारत में युवाओं का लोकप्रिय मंच बन गया है। बीसीजी इंडिया की सीनियर पार्टनर और मैनेजिंग डायरेक्टर निमिषा जैन ने कहा, जनरेशन जेड पहले से ही भारत के उपभोक्ता खर्च का 43 प्रतिशत हिस्सा चला रही है। उनका प्रभाव चुनिंदा श्रेणियों तक सीमित नहीं है - यह फैशन, खाने-पीने से लेकर ऑटोमोबाइल और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स तक की श्रेणियों में फैला हुआ है। रिपोर्ट में कहा गया है कि यह गतिशील समूह अलग-अलग कैटेगरी में व्यय को प्रभावित कर रहा है। जैसे कि कुल व्यय का 50 प्रतिशत फुटवियर पर, 48 प्रतिशत भोजन पर, 48 प्रतिशत आउट-ऑफ-होम मनोरंजन पर और 47 प्रतिशत फैशन और जीवनशैली पर खर्च किया जा रहा है। खर्च के वितरण का तरीका यह दर्शाता है कि वर्तमान में, जनरेशन जेड की कुल व्यय क्षमता 860 बिलियन डॉलर है। इसमें लगभग 200 बिलियन डॉलर प्रत्यक्ष व्यय (जो पैसा वे खुद कमाते हैं और खर्च करते हैं) से आता है। बाकी के 660 बिलियन डॉलर वे दूसरों के सुझाव या पसंद के आधार पर खर्च करते हैं।

आईसीसी रैंकिंग में जो रूट को हुआ फायदा

नई दिल्ली (एजेंसी)। आईसीसी ने खिलाड़ियों की ताजा रैंकिंग जारी की है। इंग्लैंड के दिग्गज बल्लेबाज जो रूट ने अब आईसीसी टेस्ट रैंकिंग के एक स्पेशल 20 क्लब में एंट्री की है। भारत के स्टार क्रिकेटर विराट कोहली पहले से ही लिस्ट में विराजमान हैं। दरअसल, रूट ने क्रिकेट इतिहास में 20 पुरुष बैटर्स द्वारा हासिल की गई करियर की सर्वश्रेष्ठ टेस्ट रेटिंग हैं। कोहली 15वें नंबर पर हैं। वह 937 रेटिंग अंकों तक पहुंच चुके हैं। ऑस्ट्रेलिया के महान बल्लेबाज डॉन ब्रैडमैन 961 रेटिंग अंकों के साथ टॉप पर हैं। आईसीसी टेस्ट बल्लेबाजों की लेटेस्ट रैंकिंग की बात करें तो जो रूट टॉप पर हैं। उन्होंने पाकिस्तान के खिलाफ पहले टेस्ट में दोहरा शतक जड़ा था। उन्होंने मुल्तान में 375 गेंदों में 17 चौके जड़े और 262 रन की पारी खेली। ये रूट के टेस्ट करियर का सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर है। रूट ने दोहरा शतक जमाने के बाद रेटिंग अंकों में इजाफा किया है। इससे पहले उनके हाईएस्ट रेटिंग अंक 923 थे। रूट ने रैंकिंग में 100 से ज्यादा अंकों की बढ़त हासिल की। वहीं न्यूजीलैंड के केन विलियमसन 829 अंक के साथ संयुक्त रूप से दूसरे स्थान पर हैं। उनके साथ इंग्लैंड के हैरी ब्रूक 829 अंक भी हैं। ब्रूक ने मुल्तान में तिहरा शतक (317) जमाया था उन्होंने 11 स्थान की छलांग लगाई। कोहली सातवें नंबर पर हैं।

हमें विकसित राष्ट्र बनने के लिए 100 मिलियन नौकरियां पैदा करने की जरूरत : टाटा संस चेयरमैन एन चंद्रशेखरन

नई दिल्ली(एजेंसी)। टाटा संस के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की राह में नई नौकरियों को लाए जाने की बात कही है। चंद्रशेखरन ने जोर देकर कहा है कि भारत विकसित राष्ट्र बनने की ओर अग्रसर है और देश को बढ़ते कार्यबल की रोजगार जरूरतों को पूरा करने के लिए 10 करोड़ नौकरियों का सृजन करने की जरूरत है। टाटा समूह देश में अधिक से अधिक विनिर्माण नौकरियां बनाने पर भी ध्यान दे रहा है, क्योंकि पूरा इकोसिस्टम भारतीय कंपनियों, विशेषकर 500,000 छोटे और मध्यम उद्यमों (एसएमई) के लिए कई अवसरों से भरा हुआ है। चंद्रशेखरन के अनुसार, टाटा समूह सेमीकंडक्टर, प्रिसिशन मैन्युफैक्चरिंग, असेंबली, इलेक्ट्रिक वाहन, बैटरी और संबंधित उद्योगों में निवेश कर रहा है, इसलिए वह अगले पांच वर्षों में पांच लाख विनिर्माण नौकरियां पैदा कर सकता है। सेमीकंडक्टर विनिर्माण जैसे क्षेत्र कई अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा कर सकते हैं। भारतीय गुणवत्ता प्रबंधन फाउंडेशन द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने कहा, हमें विकसित राष्ट्र बनने के लिए 100 मिलियन नौकरियां पैदा करने की जरूरत है। देश में हर महीने लगभग दस लाख लोग कार्यबल में शामिल होते हैं, जिससे देश के भविष्य के विकास के लिए विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन आवश्यक हो जाता है। पिछले महीने, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने टाटा संस और ताइवान की पावरचिप सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कारपोरेशन (पीएसएमसी) की नेतृत्व टीम से मुलाकात की, जो गुजरात के धोलेरा में 91,000 करोड़ रुपये की लागत से मेगा सेमीकंडक्टर फैब्रिकेशन फैसिलिटी का निर्माण कर रहे हैं। मार्च में, प्रधानमंत्री मोदी ने गुजरात में टाटा-पीएसएमसी चिप प्लांट की आधारशिला रखी थी। फैब निर्माण से क्षेत्र में 20,000 से अधिक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष कुशल नौकरियां पैदा होंगी। असम में टाटा समूह का सेमीकंडक्टर प्लांट प्रतिदिन 4.83 करोड़ सेमीकंडक्टर चिप्स का उत्पादन करेगा, साथ ही चालू होने पर 15,000 प्रत्यक्ष और 13,000 तक अप्रत्यक्ष नौकरियां पैदा करेगा। टाटा समूह देश में एक नए आईफोन असेंबली प्लांट के लिए तैयार है, जिसके जल्द ही चालू होने की संभावना है। वित्त वर्ष 2024 में नौकरियों में वृद्धि हुई है, भारत के विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार में 7.4 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जिसमें 1.3 मिलियन नई नौकरियां पैदा हुईं - जो वित्त वर्ष 2022 में 1.1 मिलियन थीं। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में वित्त वर्ष 23 में विनिर्माण क्षेत्र की नौकरियों और श्रमिकों के वेतन में उल्लेखनीय वृद्धि का श्रेय पीएम मोदी को दिया, जहां इनमें क्रमश: 7.6 प्रतिशत और 5.5 प्रतिशत की वृद्धि हुई है।

सुराधा रानी मेमोरियल अंडर -15 क्रिकेट टूर्नानेंट के द्वितीय संस्करण की ट्रॉफी का अनावरण

चंडीगढ़(एजेंसी) । अशोक मल्होत्रा लीजेंड पूर्व भारतीय क्रिकेटर और बीसीसीआई क्रिकेट सलाहकार समिति ने होटल वेस्टर्न कोर्ट, सेक्टर -10, पंचकुला में सुराधा रानी मेमोरियल अंडर -15 क्रिकेट टूर्नामेंट के दूसरा संस्करण की ट्रॉफी का अनावरण किया। इस अवसर में डॉ। संदीप अरोड़ा, संयोजक, वरिंदर चोपड़ा, तकनीकी सचिव, डॉ .विकस शर्मा, शरणजीत सिंह, सचिन बजाज, प्रेम कौशल और अमरजीत कुमार, आयोजन सचिव और सभी भाग लेने वाली टीमों के कोच और कप्तान भी मौजूद थे। अशोक मल्होत्रा पूर्व और लीजेंड भारतीय क्रिकेटर ने मीडिया और दर्शकों को संबोधित किया और कहा कि मैं वास्तव में सराहना करता हूं और हरियाणा स्पोर्ट्स वेलफेयर एसोसिएशन की सराहना करता हूं, जो सभी सदस्य, जो जमीनी स्तर पर क्रिकेट को बढ़ावा देने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं और एक प्रदान करने में लगे हुए हैं शहर के ग्रामीण/पिछड़े क्षेत्रों से नवोदित क्रिकेटरों के लिए मंच। मैं बधाई देता हूं और आयोजकों को शुभकामनाएं देता हूं क्योंकि वे नियमित रूप से पिछले 16 वर्षों से बड़े पैमाने पर राष्ट्रीय स्तर पर लड़कों और लड़कियों के क्रिकेट को बढ़ावा दे रहे हैं। डॉ। संदीप अरोड़ा ,संयोजक और टूर्नामेंट के आयोजन सचिव अमरजीत कुमार के अनुसार स्वर्गीय सुराधा रानी मेमोरियल अंडर-15 क्रिकेट टूर्नामेंट के इस दूसरे संस्करण में कुल आठ टीमें भाग लेंगी, जो 16 अक्टूबर से आईवीसीए क्रिकेट ग्राउंड, डेराबस्सी में शुरू होगा हर टीम इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में न्यूनतम 4 मैच खेलेंगी। प्रत्येक पूल से 2 टीमें सेमीफाइनल के लिए क्वालीफाई करेंगी। सेमीफाइनल और फाइनल मैच 23 और 24 अक्टूबर को टीडीएल क्रिकेट स्टेडियम, पंचकुला में खेला जाएगा।

खतरे में है हरमनप्रीत कौर की कप्तानी, टी20 वर्ल्ड कप में खराब प्रदर्शन के बाद बीसीसीआई कर सकता है बदलाव

नई दिल्ली (एजेंसी)। हरमनप्रीत कौर की कप्तानी में भारतीय महिला टीम टी20 वर्ल्ड कप से बाहर हो गई हैं। जिसके बाद हरमनप्रीत कौर की कप्तानी पर खतरा मंडरा रहा है। वहीं भारतीय कंट्रोल बोर्ड इस बात पर फैसला लेने के लिए पूरी तरह तैयार है कि यूएई में महिला टी20 वर्ल्ड कप से जल्दी बाहर होने के बाद भारतीय महिला टीम को नए कप्तान की जरूरत है या नहीं। हाल के वर्षों में पहली बार हरमनप्रीत कौर की अगुवाई वाली भारतीय टीम नॉकआउट चरण तक भी नहीं पहुंच पाई और आईसीसी ट्रॉफी के लिए उनका इंतजार जारी रहा। इंडियन एक्सप्रेस को मिली जानकारी के अनुसार बीसीसीआई चयन समिति और मुख्य कोच अमोल मजूमदार के साथ हरमनप्रीत की कप्तान के भविष्य पर चर्चा करने के लिए बैठक करेगा। साथ ही ये भी कहा जा रहा है कि, बैठक 24 अक्टूबर से न्यूजीलैंड के खिलाफ शुरू होने वाले तीन मैचों की वनडे सीरीज के लिए टीम के चयन से पहले होगी। संयोग से, हरमनप्रीत ने 2016 में भारत की टी20 कप्तान के रूप में पदभार संभाला था, जब टीम घरेलू सरजमीं पर आयोजित टूर्नामेंट की सेमीफाइनल में जगह बनाने में विफल रही थी। 2024 के टूर्नामेंट से पहले हरमनप्रीत की अगुवाई में भारत नॉकआउट में जगह बनाने में कायमबा रहा है और 2020 के सीज में फाइनल में पहुंची, लेकिन जीत नहीं पाई। 2024 में एक मजबूत टीम होने के बावजूद, भारत पहले ही मैच में न्यूजीलैंड से हार गया, जिससे सेमीफाइनल में पहुंचने की उनकी संभावनाएं काफी कम हो गईं। पिछले रविवार को ऑस्ट्रेलिया ने उन्हें हराकर बाहर कर दिया। हालांकि, हरमनप्रीत की जगह भारतीय टीम में सुरक्षित है, लेकिन संभावना है कि कुछ सहयोगी स्टाफ के अनुबंध को नवीनीकृत नहीं किया जाएगा।

जिप इलेक्ट्रिक का नुकसान वित्त वर्ष 24 में 2.2 गुना बढ़कर 91 करोड़ रुपये हुआ

नई दिल्ली(एजेंसी)। इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) कंपनी जिप इलेक्ट्रिक का नुकसान वित्त वर्ष 24 में 2.2 गुना बढ़कर 91 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि इससे पहले के वित्त वर्ष में 40 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 24 के फाइनेंसियल स्टेटमेंट्स के मुताबिक, जिप इलेक्ट्रिक का ईबीआईटीडीए मार्जिन नकारात्मक 19.47 प्रतिशत रहा है। वित्त वर्ष 24 में कंपनी का खर्च 2.6 गुना बढ़कर 394 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि वित्त वर्ष 23 में 152 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 24 में कंपनी की संचालन से आय 293 करोड़ रुपये रही। वित्त वर्ष 23 में कंपनी की संचालन से आय करीब 109 करोड़ रुपये थी। जिप इलेक्ट्रिक की स्थापना 2017 में हुई थी। कंपनी के मुताबिक, उसके पास 22,000 वाहनों की एक एक्टिव फ्लीट है। वाहनों से किराया और डिलीवरी सर्विसेज कंपनी की आय का मुख्य जरिया है। इस साल मई में जिप इलेक्ट्रिक की ओर से 15 मिलियन डॉलर का फंड जुटाया गया था। कंपनी की योजना 2026 तक इलेक्ट्रिक स्कूटर्स की फ्लीट को बढ़ाकर 2,00,000 करना और अपने ऑपरेशन का विस्तार 15 शहरों तक करना था। इस फंडिंग राउंड का नेतृत्व जापानी निवेशक कंपनी ईएनईओएस की ओर से किया गया था। इसके अलावा 9यूनिकॉर्न, आईएएन फंड और अन्य निवेशकों ने इस फंडिंग राउंड में भाग लिया था। जिप इलेक्ट्रिक की ओर से हाल ही में मुंबई और हैदराबाद में ऑपरेशन लॉन्च किए गए हैं। कंपनी द्वारा जनवरी 2023 से लेकर मार्च 2023 के बीच 50 मिलियन से ज्यादा डिलीवरी की गई हैं।

जिप इलेक्ट्रिक ने अब तक 80 मिलियन डॉलर से अधिक जुटाए हैं, जिसमें फरवरी 2023 में ताइवानी ईवी निर्माता गोगोरो के नेतृत्व में जुटाए गए 25 मिलियन डॉलर भी शामिल हैं। इलेक्ट्रिक वाहन कंपनी वर्तमान में जोमैटो, स्विगी, अमेजन, फ्लिपकार्ट सहित 50 से अधिक दिग्गज कंपियों के लिए डिलीवरी और राइड-शेयरिंग सेवाओं का प्रबंधन करती है।

पंजाब स्टेट बैडमिंटन में विहान और मनन ने जीता मेडल

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब स्टेट सब-जूनियर बैडमिंटन चैंपियनशिप में विहान कपूर और उनके डबल्स पार्टनर मनन ने सिल्वर मेडल हासिल किया है। बॉयज डबल्स अंडर-13 वर्ग में दोनों ने पोडियम पर जगह बनाई। स्टेट का आयोजन अबोहर में कया गया था और दोनों को ही कड़े मुकाबले का सामना करना पड़ा। टीडा स्पोर्ट्स बैडमिंटन एकेडमी के खिलाड़ियों ने किसी को संभलने का मौका नहीं दिया। युवा जोड़ी ने शानदार टीमवर्क और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया। विहान कपूर और मनन ने सेमीफाइनल में पंजाब के कुछ शीर्ष खिलाड़ियों को हराकर फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया।

शब्द सामर्थ्य -209

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं :
1. अनुचित, असत्य, जो ठीक न हो 3. बेवजह, बिनाकारण, व्यर्थ 4. हल्कीनींद, चकमा, धोखा 6. शक्कर पानी आदि का मीठा घोल 10. सोते से उठाना, सावधान करना, प्रदीप्त करना 11. चरमसीमा, सीमांत 14. पानी, आंसू 15. बैठा हुआ, विराजित 16. नृत्य 17. मृतप्राय, मृत्यु के करीब 19. जल, अम्बु 22. उपहार, भेंट 23. खबर, संदेश।

ऊपर से नीचे
1. गणपतिजी, 2. मांगनेवाला, पाने की इच्छा करने वाला 3. मिट्टी के रंग का, मटमैला 5. चला आता हुआ क्रम प्रथा, प्रणाली, रीति-रीवाज, 7. निशाचर, रात में विचरण करने वाला 8. पेड़ का धड़ा जहां से शाखाएं निकलती है, 9. मिठाई, खाने की मीठी चीज 12. शासन, गुप्तबात 13. श्रद्धा, स्त्री, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित प्रसिद्ध महाकाव्य 15. विपत्तिग्रस्त, दुखी, अभागा 16. प्रसिद्ध, नामवर 18. स्वप्न, ख्वाब 20. करीब, नज़दीक, समीप 21. सुबह, प्रात:, सबेरा।

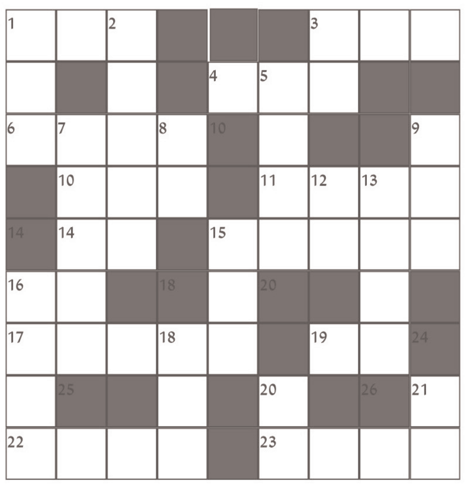

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 208 का हल

अ	भि	षे	क		प	स		
जा	त		थ	प	थ	पा	ना	
य	र	का	नी		भ्र		र	श्मि
ब	घा	र		क	ष्ट	प्र	द	
	त	ना	त	नी		र्व		ब
अ		मा		ज	मा	त		ल
स	जा					क	ज	रा
बा		बे	स	हा	रा		ग	म
ब	गु	ला		रा	ज	दू	त	

कार्यालय कार्यपालन अभियंता लो.नि.वि. (वि./यां.) संभाग, जगदलपुर छ.ग.

निविदा आमंत्रण सूचना

क्रमांक :- 5564/NIT- 04/2024-2025/व.ले.लि. दिनांक 15.10.2024

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदार से ''प्रपत्र- ए'' में प्रतिशत दर पर निम्नलिखित कार्यों हेतु मेन्युल निविदा आमंत्रित की जाती है.

निविदा प्रपत्र क्रय करने हेतु आवेदन प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि :- 24.10.2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
एम.आर. काटने की अंतिम तिथि :- 25.10.2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
ठेकेदार द्वारा प्रस्तुत निविदायें प्राप्त करने की अंतिम तिथि :- 05.11.2024 अपरान्ह 5.30 बजे तक
निविदा खोलने की तिथि :- 06.11.2024 पूर्वान्ह 11.30 बजे से

निविदा क्र.	कार्य का नाम प्रथम आमंत्रण	कार्य की अनु-मानित लागत (लाख में)	कार्य की अवधि
T-025 से T-045	लोक निर्माण विभाग (वि./यां.) उप संभाग बीजापुर अंतर्गत विभिन्न शासकीय भवनों, विश्राम गृहों एवं विश्राम भवनों में विद्युतीकरण का वार्षिक संधारण कार्य.	50.00 (कुल 10 अलग-अलग कार्य)	प्रत्येक कार्य 12-12 माह
	लोक निर्माण विभाग (वि./यां.) उप संभाग सुकमा अंतर्गत विभिन्न शासकीय भवनों, विश्राम गृहों एवं विश्राम भवनों में विद्युतीकरण का वार्षिक संधारण कार्य.	50.00 (कुल 10 अलग-अलग कार्य)	प्रत्येक कार्य 12-12 माह
	जिला दन्तेवाड़ा के विश्राम भवन का वार्षिक संधारण कार्य.	05.00 (कुल 01 अलग-अलग कार्य)	प्रत्येक कार्य 12-12 माह

निविदा संबंधी शर्तें विभागीय वेबसाईट www.cg.nic.in/pwdraipur में Live Tender के अंतर्गत निविदा प्रपत्र में उपलब्ध है. इनका अवलोकन संबंधित संभाग कार्यालय में किया जा सकता है. कार्य का भुगतान आबंटन प्राप्त होने पर ही किया जायेगा.

कार्यपालन अभियंता
लो.नि.वि. (वि./यां.) संभाग
जगदलपुर (छ.ग.)

G-242503226/3

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
रायपुर, शुक्रवार 18 अक्टूबर 2024

मुख्यमंत्री साय आज भिलाई में 'क्षेत्रीय उद्यमी सम्मेलन-2024' में होंगे शामिल

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय 18 अक्टूबर को दोपहर 2 बजे भिलाई के खुर्सीपार स्थित अग्रसेन भवन में आयोजित 'क्षेत्रीय उद्यमी सम्मेलन-2024' में शामिल होंगे। निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मुख्यमंत्री श्री साय दोपहर 1.40 बजे पुलिस ग्राउण्ड हेलीपेड रायपुर से हेलीकॉप्टर द्वारा रवाना होकर 1.55 बजे दुर्ग जिले के भिलाई-3 हेलीपेड पहुंचेंगे। श्री साय दोपहर 2 बजे अग्रसेन भवन खुर्सीपार में आयोजित क्षेत्रीय उद्यमी सम्मेलन-2024 में शामिल होंगे। मुख्यमंत्री श्री साय अपराह्न 3.05 बजे भिलाई-3 से रवाना होकर 3.20 बजे रायपुर लौट आएंगे।

विद्या के सागर से सराबोर शरदोत्सव : देश-विदेश से आए शिष्य, नृत्य नाटिका, प्रदर्शनी का हुआ भव्य आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। दिगंबर जैनाचार्य ब्रह्मलीन संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर के जन्मोत्सव पर भव्य महामहोत्सव शारदोत्सव का आयोजन गुरूवार को हुआ। शहर स्थित दीनदयाल ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में देश-विदेश से अतिथिगण शामिल हुए। गुरू शरणम शारदोत्सव में जहां एक ओर आचार्य विद्यासागर के जीवन-दर्शन पर आधारित शानदार नृत्य नाटिका का मंचन हुआ वहीं उनकी प्रेरणा से देशभर में संचालित विभिन्न प्रकल्पों की मनभावन प्रस्तुतियां दी गई, इस अवसर किए जा रहे विभिन्न क्रियाकलापों की झांकी, प्रदर्शनी लगाई और उनमें तैयार होने पूर्णत: शुद्ध व जैविक उत्पादों को प्रस्तुत किया गया।

दीनदयाल ऑडिटोरियम में हुए शारदोत्सव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य सभा सांसद उत्तरप्रदेश नवीन जैन ने की। राष्ट्रीय, अल्प संख्यक आयोग के अध्यक्ष धन्यकुमार जिनप्पा गुंडे, रायपुर लोकसभा सांसद बृजमोहन अग्रवाल, स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल, मुख्य सचिव छ.ग. शासन अमिताभ जैन, कुंवर मानवेंद्र सिंह, सभापति उत्तरप्रदेश विधान परिषद, रायपुर पश्चिम के विधायक राजेश मूणत, उद्योगपति बजरंग केडिया, भारत सरकार की नीति आयोग की सदस्य अर्चना जैन विशेष अतिथि के रूप में शामिल हुए। मंचस्थ अतिथियों द्वारा आचार्य विद्यासागर महाराज एवं नवाचार्य समय सागर महाराज के चित्र का अनावरण व दीप प्रज्वलन द्वारा किया गया। इस मौके पर मंचस्थ अतिथियों द्वारा मुनि धैर्य सागर द्वारा रचित आचार्य विद्यासागर के समग्र जीवन पर आधारित पुस्तक अंतर्यात्री महापुरूष तथा ब्र. सुनील भैया द्वारा लिखित प्रथम चारित्र चक्रवर्ती शांति सागर महाराज पर आधारित पुस्तक श्रमणत्व के क्षितिज का विमोचन किया गया।

कार्यक्रम में सभा को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि की आसंदी से डॉ. रमन सिंह ने कहा कि यह गौरवशाली कार्यक्रम कोई सामान्य मंचीय, धार्मिक, राजनीतिक कार्यक्रम नहीं है। आचार्य विद्यासागर सभी धर्मों के लिए पूजनीय, सूर्य के प्रकाश की भांति प्रभावशाली व हितकारी रहे हैं। भौतिकतावादी युग में भी धर्म व संस्कृति से जोड़ने के लिए जिस तरह से प्रयास किए जा रहे हैं वह अद्भुत हैं। श्री सिंह ने कहा कि इतिहास को पुन: खंगालने की जरूरत है क्योंकि जैन धर्म अर्वाचीन है, जिस तरह के साक्ष्य व प्रमाण प्राप्त होते हैं उससे इस धर्म की महत्ता ज्ञात होती है। जैन धर्म की यश पताका व कीर्ति युगों-युगों तक लहराती रहेगी। अध्यक्षीय भाषण देते हुए नवीन जैन ने कहा कि आचार्य विद्यासागर ने जिस तरह तप आराधना की है वह हम सबके लिए अनुकरणीय है। जैन समाज को उनके द्वारा प्रारंभ किए गए प्रकल्पों को सतत् आगे बढ़ाते रहने का प्रयास करते रहना चाहिए। विशिष्ट अतिथि स्वास्थ्य मंत्री श्याम बिहारी जायसवाल ने कहा कि मुख्यमंत्री जी विष्णु देव जी के आदेशानुसार जैन समाज के लिए पूर्व में की गई समस्त घोषणाओं को हम पूर्ण करेंगे। छ.ग. शासन जैन समाज के संतों की सुरक्षा करने, गौशाला आदि हेतु भूमि दान करने जैसी समस्त आवश्यकताओं को पूरा करेगा। इस मौके पर बाल ब्रह्मचारी सुनील भैया ने कहा कि आचार्य गुरू शांतिसागर जैसी चर्या का परिपालन आचार्य विद्यासागर महाराज ने कर धर्म को शिखर पर पहुंचा दिया। गुरूदेव संस्कारों के साथ शिक्षा को प्रदान करने के लिए प्रारंभ किए गए प्रकल्पों को हमें ऊंचाई पर ले जाने के प्रयास करते रहना चाहिए। रायपुर सांसद बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि आचार्य विद्यासागर की तपश्चर्या से प्रभावित होकर प्रधानमंत्री सहित देश के प्रमुखजन भी उनका अनुसरण कर उनसे विचार-विमर्श करते थे, यह उनके ही व्यक्तित्व का प्रभाव है। छ.ग. की भूमि पुण्य हो गई है जहां विद्यासागर जैसे त्यागी तपस्वी विश्व गुरू के रूप में यह सदा के लिए स्थापित हो गई हैं। विद्यासागर महाराज पर विद्यापीठ और उनके नाम पर पुरस्कार देने और गौशाला हेतु जमीन देने की घोषणा को हम हर हाल में पूरा करेंगे।

एक दिवसीय शारदोत्सव का आगाज़ संगीतमय आराधना के साथ विशेष भक्तामर पाठ से हुआ। भजन संध्या में सुमुधर गीतों, भजनों व कव्वाली की प्रस्तुति दी गई जिसने श्रोताओं को भावविभोर कर दिया और करतल ध्वनि से ऑडिटोरियम गुंजायमान हो गया। मुंबई से आई मधुर आवाज की धनी कलाकार विधि जैन द्वारा जहां पर देवदर्शन हो वहीं भव पार होता है.., मंत्र नमोकार हमें.., जय-जय आदिनाथ जी... जैसे शानदार भजनों की प्रस्तुति देकर श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। छ.ग. रत्न से सम्मानित, अब्दुल कलाम सव्य साची पुरस्कार से सम्मानित खुशी जैन व शिष्याओं द्वारा भरतनाट्यम नृत्य कर मंगलाचरण की शानदार प्रस्तुति दी गई। इस अवसर पर बुधवार को संपूर्ण छत्तीसगढ़ के 76 दिगंबर जैन मंदिरों में एक साथ आचार्य छत्तीसी विधान संपादित कर बनाए गए वर्ल्ड रिकॉर्ड का सर्टिफिकेट गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड के पदाधिकारियों द्वारा दिगंबर जैन समाज को प्रदान किया गया। इस अवसर पर आचार्य विद्यासागर के जनकल्याणकारी कार्यों से उपकृत देश विदेश की संस्थानों के प्रमुखगणों, विद्वानों, चिकित्सकों द्वारा अपने अनुभव साझा किए गए। जिसमें प्रतिभास्थली स्कूल डोंगरगढ़, इंदौर, जबलपुर, इंदौर एवं चल चरखा केंद्रों के ब्र.उन्नति दीदी, ब्र. नीरजा दीदी, ब्र. गुंजन दीदी, ब्र. रूचि दीदी, पूर्व छात्रा आरूषि जैन, श्रमदान एवं अपनापन से ब्र. अंकित भैया, ब्र. अनुराग भैया, दयोदय महासंघ एवं शांतिधारा से कोषाध्यक्ष अभिषेक जैन, महासचिव राकेश जैन, पूर्णायु संस्थान जबलपुर की छात्रा विभा, वरूणिका, डॉ. स्वप्निल जैन, भाग्योदय हॉस्पिटल सागर के डायरेक्टर सौरभ जैन, पाषाण मंदिर के निर्माण से संबंधित मनीष जैन, ब्र. संजीव भैया व मंदिर निर्माण से जुड़ने के बाद शाकाहार को अपनाकर सात्विक जीवनशैली अपनाने वाले शफीक खान ने अपने अनुभव और जीवन में आए परिवर्तनों के बारे में बताया। आचार्य विद्यासागर की प्रेरणा से जीवन परिवर्तित कर हथकरघा के जरिए स्वरोजगार अपनाने वाले कैदियों में से पूर्व कैदी पप्पू अंसारी ने भी अपने विचार एवं भाव व्यक्त किए।

वहीं आयोजन का आकर्षण रहे जबलपुर से आए राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त विवेचना रंगमंडल के 30 कलाकारों द्वारा भावभीना व शानदार नृत्य नाटिका का मंचन किया गया। विद्याधर से विधासागर बनने की यात्रा आत्मान्वेषी नामक नृत्य नाट्य की शानदार मनभावन प्रस्तुति दी गई। इस नाटक के लिए 2011 में राष्ट्रपति संगीत अकादमी पुरस्कार से डिजाइन, लाइट, ऑपरेटिव संचालन के लिए पुरस्कृत कमल जैन, लेखक अर्चना मलैया व डायरेक्टर अरूण पांडेय थे। कार्यक्रम का समापन प्रतिक्रमण एवं महाआरती से किया गया। ज्ञात हो कि समाधिस्थ महान आचार्य विधासागर महाराज और नवाचार्य समय सागर दोनों पिता मलप्पा और माता श्रीमती की संताने हैं और दोनों का अवतरण शरदपूर्णिमा को हुआ था। ब्रह्मचारी सुनील भैया की अगुवाई में आयोजित शारदोत्सव में सकल दिगंबर जैन समाज के अध्यक्ष नरेश जैन, विनोद बड़जात्या, मनीष जैन, प्रदीप जैन, अरविंद बड़जात्या, यशवंत जैन, अजय जैन, लोकेश चंद्रकांत, किशोर जैन अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र डोंगरगढ़, चंद्रकांत जैन, सुरेंद्र जैन, अरविंद पहाड़िया, दुर्ग महापौर धीरज बाकलीवाल सहित बड़ी संख्या में लोग उपस्थित थे।

इस दौरान आचार्य विद्यासागर द्वारा दी गई संस्कृति व शिक्षा के समन्वय की प्रेरणा से देशभर में संचालित विभिन्न प्रकल्पों की मनोहारी प्रदर्शनी, झांकी, झलकियां लगाई गई। जिसके तहत प्रतिभास्थली विद्यालय, चल चरखा केंद्रों, श्रमदान एवं अपनापन, शांतिधारा, वास्तु, पूर्णायु आयुर्वेदिक व भाग्योदय एलोपैथिक अस्पताल, दयोदय गौशालाओं के माध्यम से किए जाने वाले कार्यों व उनमें तैयार किए जाने वाले शुद्ध व जैविक उत्पादों को अल्प दरों पर विक्रय हेतु प्रदर्शित किया गया। इसके साथ विद्यासागर महाराज द्वारा आठ भाषाओं में मूकमाटी महाकाव्य, चार खंड काव्य, सात संस्कृत शतक, दस हिंदी शतक, हजार से अधिक हाइकू, सौ से अधिक प्रवचन साहित्य, पच्चीस से अधिक जीवनी प्रकाशन, कुंद कुंद का कुंदन सहित 100 से अधिक रचित ग्रंथों व साहित्यों की प्रदर्शनी लगाई गई। इस मौके पर विद्यासागर महाराज पर आधारित विशेष डाक टिकटों को भी प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में मनोहर गौशाला के प्रमुख ट्रस्टी पदम जी डाकलिया ने संरक्षित किए हुए आचार्य महाराज के पगालिया (चरण चिह्न) को जैन भक्तों के लिए दर्शनों हेतु उपलब्ध कराया गया। वहीं दुर्लभ अमूल्य कामधेनु गौमाता के गौ शरण को भी दर्शनों के लिए प्रदर्शनी में रखा गया था जो कि विश्व में सीमित संख्या में हैं जो अतुलनीय सुख-संपदा का दायक होता है। ● **डॉ. मंजूला जैन**

रायपुर स्मार्ट सिटी लि. के एमडी अबिनाश मिश्रा के निर्देशन में चौक चौराहों पर लगे आईटीएमएस सिग्नल का निरीक्षण

रायपुर स्मार्ट सिटी, ट्रैफिक पुलिस व नगर निगम की संयुक्त टीम ने किया निरीक्षण

रायपुर (विश्व परिवार)। नगर निगम आयुक्त एवं रायपुर स्मार्ट सिटी लिमिटेड के प्रबंध संचालक अबिनाश मिश्रा के निर्देश पर रायपुर स्मार्ट सिटी, यातायात पुलिस एवं नगर निगम के अधिकारियों के साथ कार्य एजेंसी एल.एंड.टी. की टीम आज एकीकृत यातायात प्रबंधन प्रणाली के तहत् विभिन्न चौक चौराहों पर स्थापित सिग्नल व उनकी टाइमिंग आदि का निरीक्षण करने निकली। ये ट्रैफिक सिग्नल और कैमरे

शहरी यातायात को व्यवस्थित करने के साथ ही अपराध नियंत्रण हेतु सर्वेलांस में उपयोगी हैं। संयुक्त दल में रायपुर स्मार्ट सिटी लि. के मुख्य परिचालन अधिकारी श्री उज्ज्वल पोरवाल, डीएसपी ट्रैफिक श्री गुरजीत सिंह, नगर निगम के कार्यपालन अधिकारी नितीश झा, आईटीएमएस प्रोजेक्ट की असिस्टेंट मैनेजर श्रीमती नेहा पटेल, डिप्टी मैनेजर रंजीत रंजन, असिस्टेंट मैनेजर शैलेन्द्र पटेल कार्य एजेंसी एल.एंड.टी. के मैनेजर दीपक मालवीय शामिल थे। यह दल अब आईटीएमएस कैमरों, सिग्नल व अन्य इकाइयों का हर सप्ताह निरीक्षण करेगा।

संयुक्त दल ने ट्रैफिक दबाव वाले क्षेत्रों में सिग्नल टाइमिंग की जांच की और स्वचालित सिग्नल की गतिविधियों को भी देखा। इस दल द्वारा आज शहर के भारी यातायात दबाव वाले 18 चौक-चौराहों निरीक्षण किया।

आईटीएमएस प्रणाली के तहत् शहर में वर्तमान में 470 कैमरे कार्यरत है। चौराहों पर लगे सिग्नल से शहरी यातायात का प्रबंधन ट्रैफिक पुलिस द्वारा इंटीग्रेटेड सिटी कमांड सेंटर (आईसीसीसी) जय स्तंभ चौक से किया जाता है, उन्हीं के निर्देश पर ट्रैफिक सिग्नल्स के ऑपरेशनल मोड में बदलाव किया जाता है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354